



04 - क्या 'फ्रीनिक्स' बनकर उभरेगे शिवराज ?



05 - बहुत अच्छे खेले लड़कों

A Daily News Magazine

भोपाल

मंगलवार, 21 नवंबर, 2023



भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 21 अंक 79 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रु.- 2 (डाक पंजीयन संख्या: म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)



06- भोजपुरी समाज के लोगों को दी छठ की शुभकामनाएं



07- फूफाजी हमारी टीम हार कैसे गई?

कड़

प्रसंगवश

तेलंगाना : बीजेपी के घोषणा पत्र में ओबीसी पर जोर क्यों?

पल्लव मिश्रा
कांग्रेस की गारंटी और केसीआर (बीआरएस) भरोसा के बाद, भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने तेलंगाना विधानसभा चुनाव के लिए अपना घोषणापत्र 'सकला जनुला सौभाग्य तेलंगाना - पीएम मोदी की गारंटी' के नाम से जारी किया है, जिसमें लगभग 25 मुद्दों को मुख्य रूप से 10 व्यापक विशेषताओं में बांटा गया है। इस आर्टिकल में हम तीन सवालों के जवाब देते- **BJP के घोषणा पत्र के क्या मायने**

केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा जारी 48 पन्नों के मनिफेस्टो में बीजेपी ने किसानों, महिलाओं, युवाओं पर विशेष फोकस किया है। साथ ही जातीय समीकरण को साधने के लिए ओबीसी और SC/ST को भी लुभाने की कोशिश की है। पार्टी ने भ्रष्टाचार को लेकर एक बार जीरो टॉलरेंस की नीति पर जोर दिया है। इसके अलावा बीजेपी ने मुफ्त की योजनाओं से भी वोटर्स को आकर्षित करने की रणनीति बनाई है।

किसानों से वादा: बीजेपी का घोषणापत्र किसान-समर्थक उपायों की बात करता है, जिसमें प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत किसानों को मुफ्त बीमा, किसानों को प्रति एकड़ 2,500 रुपये की सहायता शामिल है। पार्टी ने धान 3100 रुपये प्रति क्विंटल खरीद और किसानों को मुफ्त में देसी गाय देने का भी वादा किया।

महिला वोटर्स पर जोर: महिला स्वयं सहायता समूहों को 1 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण, बेटों के जन्म पर 2 लाख रुपये की फिक्स डिपॉजिट, महिलाओं को प्रति वर्ष चार मुफ्त धरेलू एलपीजी सिलेंडर और डिग्री एवं प्रोफेशनल कॉलेजों में छात्राओं को मुफ्त लैपटॉप देने की घोषणा की।

युवा वोटर्स पर ध्यान: पार्टी ने दावा किया कि 5 साल में 2.5 लाख युवाओं को सरकारी नौकरी और TSPSC के माध्यम से समय से गुप्त- ए और रूप-बी लेवल की परीक्षाएं होंगी।

मंहगाई कंट्रोल करने पर जोर: बीजेपी ने ऐलान किया कि सरकार बनने पर 7 दिन के अंदर पेट्रोल-डीजल पर VAT कम करेगी। वहीं, पात्र परिवारों को सरकारी और निजी अस्पतालों में 10 लाख तक का मुफ्त इलाज मिलेगा। तेलंगाना के वरिष्ठ नागरिकों को मुफ्त में अयोध्या दर्शन का वादा किया गया तो, हर साल 17 सितंबर को हैदराबाद मुक्ति दिवस और 27 अगस्त को रजाकार विभीषिका स्मृति दिवस मनाएंगे की घोषणा की।

पूरे देश में UCC लागू करना बीजेपी का मुख्य एजेंडा पहले से रहा है। लेकिन उत्तराखंड की तरह तेलंगाना में भी बीजेपी ने दावा किया कि सरकार बनने पर 6 महीने के भीतर राज्य में समान नागरिक संहिता (UCC) लागू करेगी।

बीजेपी ने घोषणा पत्र में भी साफ संकेत दिया कि ओबीसी और SC/ST उसकी प्राथमिकता में सर्वोच्च स्थान रखते हैं। अमित शाह ने ऐलान किया कि अगर तेलंगाना में बीजेपी की सरकार आती है तो राज्य का अगला मुख्यमंत्री पिछड़ा वर्ग से ही बनाया जाएगा।

दरअसल, बीजेपी का राज्य में मुख्य वोट बैंक पिछड़ा वर्ग है। जानकारी के अनुसार, राज्य में ओबीसी मतदाताओं की संख्या 50% से ज्यादा है जबकि अल्पसंख्यकों की आबादी 14% है। ओबीसी में मुन्नरकापू और रेड्डी की संख्या सबसे ज्यादा है। इसके अलावा केसीआर की स्वजातीय वेमला बिरादरी भी प्रभावशाली है।

जानकारों की मानें तो बीजेपी पहले से ही तेलंगाना के जातीय समीकरण को साधने के लिए कई ऐलान

कर चुकी है। जैसे- पार्टी ने केन्द्रीय मंत्री जी किशन रेड्डी को प्रदेश अध्यक्ष, इंदिरा राजेंद्र को चुनाव प्रबंधन समिति प्रमुख और संजय बंदी (मुन्नरकापू) को राष्ट्रीय महामंत्री बनाकर जातीय समीकरण को बैलेंस करने की कोशिश की है।

जानकारी के मुताबिक, इंदिरा राजेंद्र पिछड़ी जाति से आते हैं और उनकी जातीय वोट बैंक का 53 फीसदी हिस्सा है जबकि रेड्डी की जातीय का लगभग 5 फीसदी वोट है। बाकी 10-11 फीसदी कापू हैं, जिनका प्रतिनिधित्व बंदी और अरविंद धर्मपुरी जैसे अन्य नेता करते हैं।

बीजेपी ने मुसलमानों को दिए गए 4% आरक्षण को खत्म कर और पिछड़ा वर्ग, एससी/एसटी का कोटा बढ़ाने का भी ऐलान किया है, जैसा कर्नाटक चुनाव के दौरान घोषणा की गई थी कि मुस्लिमों को मिलने वाला 4% आरक्षण का कोटा 2%-2% लिंगगत और वोक्वालिग को दिया जाएगा। हालांकि, चुनाव में बीजेपी को इसका काफी नुकसान हुआ।

भ्रष्टाचार पर नीति साफ: घोषणा-पत्र में कहा गया कि सत्ता में आने पर कालेस्वरम और धरणी घोटालों और मौजूदा बीआरएस सरकार की ओर से की गई अन्य वित्तीय अनियमितताओं सहित भ्रष्टाचार के सभी आरोपों की जांच के लिए सुप्रीम कोर्ट के रिटायर जज की अध्यक्षता में एक जांच आयोग नियुक्त करेगी। इसके अलावा रजाकारों और निजामों के खिलाफ तेलंगाना के लोगों के बहादुर संघर्ष का दस्तावेजीकरण करने के लिए हैदराबाद में एक संग्रहालय और एक स्मारक बनाने का वादा किया।

कुल मिलाकर कर देखें तो बीजेपी ने सभी वर्गों के लिए अपने पिता से कुछ न कुछ ऐलान किया है। हालांकि, बीजेपी की एक बार फिर राज्य के 'केटरन' के लिए कोई नाम का ऐलान नहीं किया, लेकिन ये

जरूर कह दिया की जो भी वादा किया गया है वो 'मोदी की गारंटी' है और पार्टी उसी चेहरे के भरोसे चुनाव में जाएगी।

कांग्रेस ने भी किसानों के लिए पिटारा खोला है और दावा किया है कि सत्ता में आने पर उन्हें हर साल 15,000 रुपये तो खेतीहर मजदूरों को 12,000 रुपये मिलेंगे। युवाओं को रोजगार के लिए 2 लाख सरकारी नौकरी देने की बात कही है। इसके अलावा 'चेयुआ' योजना के तहत रोगियों को प्रति माह 4,000 रु. की पेंशन देने का ऐलान किया है।

बीजेपी की तरह कांग्रेस ने भी रु. 10 लाख का स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया है। बीजेपी ने पात्र परिवारों को सरकारी और निजी अस्पतालों में 10 लाख तक का मुफ्त इलाज कराने का वादा किया है।

अब तीनों पार्टी के घोषणा पत्र आ चुके हैं। बीआरएस इस सत्ता पर काबिज है तो वहीं, कांग्रेस इस बार बीआरएस को कड़ी चुनौती देती दिख रही है। हालांकि, तमाम सर्वे और ओपिनियन पोल भले ही राज्य में बीजेपी की स्थिति को मजबूत नहीं बता रहे हैं, लेकिन पार्टी ने अपने सबसे ताकतवर 'सिपाही' अमित शाह की मौजूदगी में घोषणा पत्र जारी कर साफ संकेत दिया कि तेलंगाना राज्य उसकी प्राथमिकता में कितना महत्व रखता है और बीजेपी यहां अपने पैर मजबूती से गड़ने के लिए तैयार है।

हालांकि, बीजेपी की सबसे बड़ी चुनौती ग्रामीण वोटर्स से हैं क्योंकि तेलंगाना की 119 सीटों में से ज्यादातर सीटें ग्रामीण क्षेत्र में हैं और बीजेपी का शहरी और अर्ध शहरी क्षेत्र में प्रभाव लेकिन ग्रामीण क्षेत्र में वो अभी भी अपने पांव नहीं पसार पाई है।

(दि क्रिंट हिंदी में प्रकाशित लेख संपादित अंश)

राजस्थान में कांग्रेस के लिए भ्रष्टाचार से बड़ा कुछ नहीं

● पाली में गरजे मोदी, कहा-यहां कांग्रेस को सबक सिखाना बेहद जरूरी ● कहा-केंद्र सरकार ने मोबाइल पर हर महीने 5 हजार रुपए का खर्च बचाया

पाली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का राजस्थान में चुनावी दौरा जारी है। प्रधानमंत्री पाली के जाडन में सभा को संबोधित कर मोदी ने कहा कि राजस्थान में महिला अत्याचार बढ़ा है और यहां के मुख्यमंत्री सट्टीफिकेट देते हैं कि वे फर्जी शिकायत दर्ज करवाती हैं। यह महिलाओं का अपमान है। मोदी ने कहा कि केंद्र की भाजपा सरकार ने आपके मोबाइल का बिल भी कम कर दिया है। डेटा की 2014 से पहले की कीमत होती तो आज आप जितना डेटा खर्च कर रहे हैं तो आपको एक मोबाइल पर कम से कम 5 हजार रुपए अधिक खर्च करने पड़ते। एक परिवार में कम से कम 4 मोबाइल होते हैं, मोदी ने यह खर्चा बचाया है। राजस्थान में कांग्रेस के लिए भ्रष्टाचार से बड़ा कुछ नहीं है। कांग्रेस के लिए परिवारवाद ही सब कुछ है। उसके पास तुष्टीकरण के अलावा कुछ नहीं है। दंगाइयों और आतंकियों

के हैंसले बुलंद हो गए। ऐसी विकृत वाली मानसिकता वाली कांग्रेस को अच्छे से सबक सिखाना जरूरी है। कांग्रेस और उसके घमांडिया गठबंधन की यह पहली हरकत नहीं है। सनातन को लेकर उन्होंने क्या-क्या कहा, यह सबने देखा है। कांग्रेस और उसके साथी सनातन को खत्म करने का ऐलान कर रहे हैं। सनातन को खत्म करने का मतलब है, राजस्थान की संस्कृति को खत्म करना। महिलाओं और दलितों को लेकर कांग्रेस और इनके गठबंधन के नेता कैसी-कैसी भाषा का इस्तेमाल कर रहे हैं।



बिहार के नेता ने पूर्व मुख्यमंत्री अति पिछड़े दलित परिवार से आते हैं, इसलिए उनकी बेज्जति करने में उन्हें आनंद आता है। उन्होंने पाप किया, लेकिन कांग्रेस ने इसे मलत बताने का विवेक नहीं दिखाया। राजस्थान में दलित परिवारों पर अत्याचार पर कांग्रेस ने यही किया है।

बीजेपी को वोट दिया तो एमपी की तरह पछताओगे प्रियंका गांधी बोलीं-यह सिर्फ हिन्दुस्तान-पकिस्तान करते हैं



केकड़ी (एजेंसी)। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी राजस्थान में बीजेपी के सीएम के चेहरे को लेकर लगातार हमलावर बनी हुई हैं। इस दौरान प्रियंका गांधी ने सोमवार को वसुंधरा का नाम लिए बगैर उनके प्रति अपनी हमदर्दी जताईं। प्रियंका

गांधी ने राजस्थान की केकड़ी विधानसभा में प्रत्याशी रघु शर्मा के पक्ष में चुनावी सभा को संबोधित किया। इस सभा में भी प्रियंका गांधी पीएम नरेंद्र मोदी को जमकर घेरती हुई नजर आईं। उन्होंने लोगों से अपील की है कि जनता सोच समझकर आकलन करें, कि किस सरकार ने उन्हें राहत दी है और किस सरकार ने उन्हें नुकसान। आपको एक बड़ी गलती आने वाले 5 सालों में बड़ा नुकसान कर सकती हैं। प्रियंका गांधी ने अपनी भाषण की शुरुआत ठेठ राजस्थानी भाषा में 'धणी राम राम सा' कहकर शुरुआत की। इस दौरान ग्रामीण लोगों से प्रियंका गांधी ने पूछा कि कस्यन छो। ऐसा सुनकर जनसभा में उपस्थित लोगों ने जमकर तालियां बजाईं। प्रियंका गांधी ने अपने भाषण की शुरुआत पीएम मोदी को घेरते हुए शुरू की। उन्होंने कहा कि मोदी जी राजस्थान में लगातार जो भाषण दे रहे हैं। उनमें जो आरोप और बातें कर रहे हैं। उनका मैंने आंकलन किया तो, मुझे महसूस हुआ सब गलत है।

अर्ध्य देकर लौट रहे 6 लोगों पर फायरिंग...3 की मौत

2 भाई 1 बहन ने तोड़ा दम, पिता-दो बहू घायल, बेटों के प्रेमी ने बरसाई गोलियां



लखीसराय (एजेंसी)। बिहार के लखीसराय में सोमवार सुबह छठ का अर्ध्य देकर लौट रहे परिवार पर ताबड़तोड़ फायरिंग हुई है। परिवार के लोग पूजा करने के बाद घाट से घर लौट रहे थे। घर से थोड़ी ही दूरी पर 6 लोगों को गोली मारी गई है। फायरिंग में दो भाइयों की मौत पर ही मौत हो गई है। वहीं बहन ने इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। मृतकों की पहचान शशि भूषण के बेटे चंदन कुमार और

राजनंदन कुमार के रूप में हुई है। बेटों दुर्गा कुमारी की पटना में मौत हुई। घायलों में दो बहू लवली कुमारी, प्रीति कुमारी, और पिता शशि भूषण कुमार शामिल हैं। सभी घायलों को वेग्सराय सदर अस्पताल से पटना रेफर कर दिया

गया है। घटना जिले के कवैया थाना इलाके के पंजाबी मोहल्ला की है। प्रेम-प्रसंग में मृतकों के घर के सामने ही रहने वाले आशीष चौधरी ने गोली मारी है। वारदात के बाद आरोपी फरार हो गया है। वहीं पुलिस ने मौके से हत्या में इस्तेमाल पिस्टल जब्त कर ली है। लड़की की भाभी ने बताया कि पहले से ही इन दोनों के बीच प्रेम-प्रसंग था। इसी को लेकर घटना को अंजाम दिया गया है। आशीष चौधरी मेरी ननद से जबरदस्ती शादी करना चाहता था। लखीसराय पहुंचे मुंगेर डीआईजी संजय कुमार का लिया जायजा। उन्होंने बताया कि प्रेम प्रसंग में वारदात को अंजाम दिया गया है। डीआईजी के मुताबिक, राजनंदन झा और चंदन झा को गोलीबारी में मौत हुई है।

भारतीयों के लिए वीजा-फ्री एंट्री शुरू कर सकता है वियतनाम

अभी ई-वीजा लेना पड़ता है, इससे पहले श्रीलंका-थाईलैंड ने बिना वीजा एंट्री शुरू की थी

हनोई (एजेंसी)। श्रीलंका और थाईलैंड के बाद वियतनाम भी भारत के ट्रेवलर्स के लिए वीजा फ्री एंट्री शुरू कर सकता है। अभी जर्मनी, फ्रांस, इटली, स्पेन, डेनमार्क, स्वीडन और फिनलैंड जैसे देशों के नागरिक बिना वीजा के वियतनाम में प्रवेश कर सकते हैं। लोकल न्यूज एजेंसी वीएनएक्सप्रेस के अनुसार, वियतनाम के संस्कृति, खेल और पर्यटन मंत्री गुयेन वान हंग ने पर्यटन में सुधार लाने के लिए चीन और भारत जैसे प्रमुख बाजारों के लिए शॉर्ट टर्म वीजा वेवर देने को कहा है। अगस्त के मध्य से, वियतनाम ने सभी देशों के लोगों के लिए ई-वीजा जारी करना शुरू किया है। इस साल के पहले दस महीनों में, वियतनाम में लगभग 1 करोड़ इंटरनेशनल विजिटर आए, जो 2022 की इसी अवधि की तुलना में 4.6 गुना ज्यादा है। वियतनाम के फुक्वोक आइलैंड, न्हा ट्रंग, दा नांग, ह्य लॉन्ग वे और होई एन जैसे



डेस्टिनेशन भारतीय पर्यटकों के बीच पॉपुलर है। भारत से वियतनाम के लिए वियजेट अपनी फ्लाइट ऑपरेट करता है। 14-15 हजार रुपए में राउंड ट्रिप टिकट मिल जाता है। इससे पहले अपनी इकोनॉमी को बूट देने के लिए थाईलैंड ने भारत और ताइवान के नागरिकों के लिए वीजा फ्री एंट्री का ऐलान किया था। भारतीय 10 नवंबर,

2023 से 10 मई, 2024 तक बिना वीजा के थाईलैंड जा सकते हैं और 30 दिनों तक वहां रह सकते हैं। टूरिज्म सीजन से ठीक पहले लिए गए इस फैसले से थाईलैंड को ज्यादा पर्यटकों के आने की उम्मीद है। थाई सरकार के प्रवक्ता चाई वाचरोन्के ने कहा कि इस स्कीम से 14 लाख अतिरिक्त पर्यटकों के आने की उम्मीद है।

भोपाल में इस सप्ताह ठंडा-गर्म रहेगा मौसम

● 26 नवंबर को बारिश होने का अंदेशा, बादल छाएंगे



भोपाल (नप्र)। भोपाल में इस सप्ताह मौसम का मिजाज ठंडा-गर्म रहेगा। रात में गुलाबी ठंड रहेगी तो दिन में बादल छाए रहेंगे। 26 नवंबर को बारिश भी हो सकती है। मौसम वैज्ञानिकों की माने तो 28 नवंबर के बाद ही ठंड का असर बढ़ेगा। राजधानी में पिछले दो दिन से मौसम बदला हुआ है। शनिवार को हवा थम गई थी। दिन में बादल छा गए। इससे दिन में हल्की सर्दी रही।

हालांकि, रात में पारे में ज्यादा उछाल नहीं आया। न्यूनतम तापमान 15.8 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। रविवार को सुबह से गर्मी का अहसास देखने को मिला, लेकिन शाम को मौसम में ठंडक रही। आगे ऐसा रहेगा मौसम- सोमवार को बादल छाए रहेंगे। फिर 21-22 नवंबर को तेज धूप निकलेगी। 23 नवंबर को फिर बादल छाने का अनुमान है। मौसम विभाग ने 26 नवंबर को हल्की

बारिश होने की संभावना भी जताई है। इसलिए बदला मौसम का मिजाज- बंगाल की खाड़ी से 'मिथिली' तूफान उठा है। इससे बादल छाए हुए हैं। वहीं, प्रदेश में 24-25 नवंबर को उत्तर भारत में एक वेस्टर्न डिस्टर्बेंस (पश्चिमी विक्षोभ) के एक्टिव होने से मध्यप्रदेश में भी मौसम बदलेगा। इससे बारिश होने का अनुमान भी है।

इसलिए बदला मौसम का मिजाज- बंगाल की खाड़ी से 'मिथिली' तूफान उठा है। इससे बादल छाए हुए हैं। वहीं, प्रदेश में 24-25 नवंबर को उत्तर भारत में एक वेस्टर्न डिस्टर्बेंस (पश्चिमी विक्षोभ) के एक्टिव होने से मध्यप्रदेश में भी मौसम बदलेगा। इससे बारिश होने का अनुमान भी है।

यूएफओ खोजने के लिए वायुसेना ने लगाए थे राफेल फाइटर

इंफाल एयरपोर्ट की सूचना पर एयर डिफेंस सिस्टम भी एक्टिवेट किए
नई दिल्ली (एजेंसी)। इंफाल में अनआइडेंटिफाइड फ्लाइंग ऑब्जेक्ट (यूएफओ) दिखने के बाद वायुसेना ने इनका पता लगाने के लिए 2 राफेल फाइटर प्लेन लगाए थे। इसके अलावा अपने एयर डिफेंस सिस्टम को भी फौरन एक्टिवेट कर दिया था। हालांकि, अब तक की जांच में वायुसेना को कुछ हाथ नहीं लगा। न्यून एजेंसी एएनआई ने रक्षा सूत्रों के हवाले से बताया, एयरपोर्ट से सूचना मिलने के बाद वायुसेना की ईस्टर्न कमांड ने ये राफेल भेजे थे। हमें आसमान में कहीं भी कोई ऑब्जेक्ट नहीं दिखा। राफेल फाइटर प्लेन की पश्चिम बंगाल के हाशीमारा एयरबेस पर तैनाती की गई है।

अब टनल में फंसे 41 लोगों के लिए जीवन तलाशेगा 'दक्ष'

डीआरडीओ का रोबोट हुआ ऐक्टिव, टनल के अंदर रेस्क्यू ऑपरेशन जारी

देहरादून (एजेंसी)। उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले के सिलवक्यारा में टनल में फंसे लोगों की जान बचाने को रेस्क्यू ऑपरेशन जारी है। पिछले 9 दिनों से टनल के अंदर फंसे 41 लोगों को सुरक्षित बाहर निकालने के लिए बचाव दल के सभी प्लान फेल हो चुका है। ऐसे में अब बचाव दल ने 'रोबोट' का सहारा लेने का मन बना लिया है। डीआरडीओ के 'दक्ष' रोबोट से टनल के अंदर जीवन तलाशने की कोशिश की जाएगी। रेस्क्यू ऑपरेशन में जुटे अधिकारियों का



कहना था कि टनल के अंदर मलबे के ऊपरी भाग की ओर से जांच की जाएगी। जांच के बाद और टनल के अंदर तक स्थिति का पूरा जायाजा लेने के बाद ही आगे की रणनीति बनाई जाएगी। विदित हो कि टनल के अंदर फंसे लोगों को बाहर निकालने के लिए रेस्क्यू टीम कई प्लान पर काम कर रही है। लेकिन, चिंता की बात है कि पिछले 9 दिनों से बचाव दल के हाथ विफलता ही लगी है। दूसरी ओर, सूत्रों की बात मानें तो टनल के अंदर फंसे लोगों की तबीयत भी खराब हो रही है। टनल में खुदाई करने के साथ ही रेस्क्यू ऑपरेशन लगातार जारी है।

पिनाका के बाद अब आर्मीनिया में गरजेगी भारत की तोप

पाकिस्तान और तुर्की का होगा हाजमा खराब, सीने में दर्द की आशंका

येरेवान (एजेंसी)। अजरबैजान, पाकिस्तान और तुर्की की खतरनाक तिकड़ी का सामना कर रहे आर्मीनिया की मदद के लिए अब भारत ने हथियारों का जखीरा खोल दिया है। खबरों के मुताबिक पिनाका रॉकेट सिस्टम के बाद अब भारत आर्मीनिया को एमकेआई 155 एमएम स्वचालित तोप की सप्लाई करने जा रहा है। इस तोप को भारत की रक्षा कंपनी भारत फोर्ज कल्याणी गुपु ने



पुष्टि की है कि उसे आर्मीनिया से बड़ा ऑर्डर मिला है। इसके अलावा एमकेआई 155 एमएम तोप की भी आपूर्ति आर्मीनिया को की जाएगी। भारत और आर्मीनिया में यह तोप समझौता दोनों देशों के बीच रक्षा समझौते में बड़ा कदम माना जा रहा है। दरअसल, आर्मीनिया ने अजरबैजान के हाथों नागर्नो कराबाख को गंवा दिया है और अब उसे अपने इलाके पर भी अजरबैजान के हमले का खतरा मंडरा रहा है। अजरबैजान लगातार तुर्की और पाक हथियारों की मदद से आर्मीनिया को धमकाने में जुटा हुआ है।

अपनी डिफेंस फोर्स अब होगी और ताकतवर

देश में ही बनेंगे एलसीए मार्क-2 और एएमसीए लड़ाकू विमानों के इंजन

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश के डिफेंस सेक्टर को बड़ा बूमट मिलने जा रहा है। एलसीए मार्क 2 और इंडिजिनस एडवॉंस्ड मीडियम कॉम्बैट एयरक्राफ्ट (एएमसीए) के पहले 2 स्वबाइन के इंजनों का घरेलू स्तर पर प्रोडक्शन किया जाएगा। डीआरडीओ प्रमुख डॉ. समीर दी कामत ने शनिवार को यह जानकारी दी। समीर ने कहा, एलसीए मार्क 2 के इंजन और एएमसीए के पहले दो स्वबाइन का उत्पादन अमेरिकी जीआईओ और हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड



की ओर से देश के भीतर एक साथ होगा। इसे लेकर सभी जरूरी मंजूरीयां अमेरिका से मिल गई हैं। हाल और यूएस की जीई देश में संयुक्त रूप से इन इंजनों का उत्पादन करेंगे। 30 अगस्त को सुरक्षा पर कैबिनेट समिति ने एलसीए मार्क 2 लड़ाकू विमान के डेवलपमेंट को लेकर मंजूरी दी, जो भारतीय वायु सेना में मिराज 2000, जगुआर और मिग-29 लड़ाकू विमानों की जगह लेंगे। एयरोनॉटिकल डेवलपमेंट एजेंसी के चीफ गिरिश देवधरे ने कहा, एलसीए मार्क 2 फाइटर एयरक्राफ्ट डेवलपमेंट प्रोजेक्ट को सरकार से मंजूरी मिली है। इससे डिजाइनिंग के लिए एडवॉंस्ड 17.5 टन सिंगल-इंजन विमान बनाने का रास्ता साफ होगा।

आंखों में आंसू, टूटे हुए थे दिल...

कमरे में जाकर पीएम मोदी ने टीम इंडिया को दी हिम्मत

● हार से निराश खिलाड़ियों का बढ़ाया हौसला, भविष्य के लिए किया प्रेरित

अहमदाबाद (एजेंसी)। वर्ल्ड कप 2023 के फाइनल में मिली हार भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाड़ी और फैंस के लिए किसी सदमे से कम नहीं है। 43वें ओवर की आखिरी गेंद पर ग्लेन मैक्सवेल के दो रन लेते ही करोड़ों भारतीयों का सपना टूट गया। हार के बाद भारतीय खिलाड़ियों के चेहरे पर निराशा साफ दिख रही थी। कप्तान रोहित शर्मा तो तुरंत ही ड्रेसिंग रूम के अंदर चले गए। मोहम्मद सिराज मैदान पर ही रोने लगे थे। इस मैच को देखने के लिए भारत को

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अहमदाबाद पहुंचे थे। पीएम के नाम पर ही स्ट्रेडियम का नाम नरेंद्र मोदी स्ट्रेडियम का नाम भी रखा गया है। अहमदाबाद में विश्व कप



2023 का फाइनल ऑस्ट्रेलिया से हारने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारतीय क्रिकेट टीम के ड्रेसिंग रूम में पहुंचे।



रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में सात दिवसीय नेशनल शार्ट टर्म ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन 'बेसिक ऑफ रिसर्च मेथड्स यूजिंग एसपीएसएस सॉफ्टवेयर' का आयोजन संपन्न

भोपाल। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में सात दिवसीय नेशनल शार्ट टर्म ट्रेनिंग प्रोग्राम ऑन 'बेसिक ऑफ रिसर्च मेथड्स यूजिंग एसपीएसएस सॉफ्टवेयर' का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम विश्वविद्यालय के प्रबंध संकाय, वाणिज्य संकाय, तथा मानविकी एवं उदार कला संकाय तथा शासकीय हमीदिया आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रो.रजनी कान्त, कुलपति, आरएनटीयू द्वारा किया गया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट बोधगया के लाइब्रेरियन डॉ. पी एम गुप्ता, रॉय यूनिवर्सिटी अहमदाबाद से डॉ. आशीष रामी एसोसियेटेड रिसर्च, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस एंड रिजर्व भोपाल के लाइब्रेरियन, डॉ. संदीप कुमार पाठक, प्रोफेसर एंड हैड स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एमिटी विश्वविद्यालय नोएडा की डॉ. कविता इंदुपुरकर, इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एज्युकेशन एंड रिसर्च के एसोसियेटेड प्रोफेसर डॉ. परमजीत सिंह तथा डॉ. स्वाति चौहान, एडवाइजर, सेंटर फॉर इकोनॉमिक्स सेक्टर (AIGGPA) द्वारा शोधार्थियों को ट्रेनिंग प्रदान की गई। सात दिन चलने वाले सभी तकनीकी सत्रों में शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों



तथा सहायक प्राध्यापकों ने शोध कार्य में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न सॉफ्टवेयर के उपयोग पर हैंडस ऑन ट्रेनिंग प्राप्त की। डॉ. पी एम गुप्ता ने मेंडले सॉफ्टवेयर के प्रयोग से रिफरेंसिंग एवं रिव्यू ऑफ लिटरेचर पर प्रशिक्षण प्रदान किया। डॉ. स्वाति चौहान ने एसपीएसएस सॉफ्टवेयर का उपयोग शोध में किस प्रकार किया जाएगा इस पर सतत दो दिनों तक प्रशिक्षण दिया। ट्रेनिंग प्रोग्राम द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े 180 शोधार्थियों एवं अकैडमिशियन ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। समापन समारोह में रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीकान्त ने सभी को संबोधित करते हुए

कहा कि इस प्रकार के ट्रेनिंग कार्यक्रम शोधार्थियों को शोध की विधियों और शोध में एसपीएसएस के प्रयोग के विषय में सटीक जानकारी प्रदान करते हैं जिससे शोधकर्ता नवीन तकनीक का प्रयोग करने में सक्षम होंगे। अंत में शोधार्थियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए।

समापन समारोह में शोधार्थी स्मिता ठाकुर, सच्चिदानंद, प्रीतू सिंह द्वारा कहा गया कि यह प्रशिक्षण उनके शोध कार्य में गुणवत्ता की वृद्धि करेगा एवं प्रशिक्षण में प्राप्त जानकारी को वह अपने शोध कार्य में निश्चित रूप से उपयोग करने में समर्थ हुए हैं। कार्यक्रम का प्रतिवेदन श्रीमती नीता घाघेकर ने प्रस्तुत किया। समापन समारोह में

वाणिज्य संकाय के डीन डॉ. रविंद्र पाठक द्वारा आभार व्यक्त किया गया।

सात दिवसीय कार्यक्रम में कोऑर्डिनेटर डॉ. उषा वैद्य प्राध्यापक समाजशास्त्र, श्रीमती नीता घाघेकर सह प्राध्यापक मैनेजमेंट, श्रीमती प्रीति तिवारी सहायक प्राध्यापक कॉमर्स तथा डॉ. मनोज सिन्हा, प्राध्यापक शासकीय हमीदिया आर्ट एंड कॉमर्स कॉलेज भोपाल ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम के कन्वीनर डॉ. रबीन्द्र पाठक, डीन वाणिज्य संकाय, डॉ. प्रीति श्रीवास्तव डीन प्राध्यापक तथा डॉ. रवि मिश्रा तिवारी डीन मानविकी एवं उदार कला संकाय रहे।

महाराष्ट्र में अब नई खिचड़ी

एकनाथ शिंदे के मंत्री ही नए मोर्चे की तैयारी में रैली करके दिखाई ताकत, छगन भुजबल हुए ऐक्टिव

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र की राजनीति में उथल-पुथल और लगातार नए खेमों का तैयार होना जारी है। मराठा आरक्षण आंदोलन पर अब तक एकनाथ शिंदे सरकार कोई हल नहीं निकाल सकी है। इस बीच ओबीसी जातियों की खेमेबंदी नई टेंशन दे रही है। दिग्गज नेता यह है कि सरकार में ही मंत्री छगन भुजबल इस खेमे का नेतृत्व कर रहे हैं। चर्चा तो यहां तक है कि वह ओबीसी के नाम पर एक नई पार्टी या फिर मोर्चा भी खड़ा कर सकते हैं। 17 नवंबर को जालना में हुई ओबीसी रैली के बाद से इसके कयास लग रहे हैं। जालना की रैली में मौजूद कई वक्ताओं ने छगन भुजबल से ओबीसी मोर्चे की लीडरशिप संभालने को कहा। यही नहीं उन्हें सीएम बनाने तक की मांग की गई। महाराष्ट्र की राजनीति फिलहाल मराठा और ओबीसी खेमों में बंटती दिख रही है। एक तरफ मनोज जागो पाटिल के नेतृत्व में मराठा

आंदोलन जोर पकड़ रहा है तो वहीं छगन भुजबल और कांग्रेस नेता विजय वर्डेतिवार एक ओबीसी मोर्चा खड़ा करने की कोशिश में हैं। दरअसल दोनों नेता लंबे समय से साइडलाइन चल रहे हैं। ऐसे में इन्हें लगता है कि मराठा आंदोलन के मुकाबले वह ओबीसी जातियों को साथ ला सकते हैं। छगन भुजबल लगातार कहते रहे हैं कि मराठाओं को ओबीसी का दर्जा नहीं दिया जा सकता। यदि ऐसा होता है तो यह ओबीसी समाज के हक कीमत पर होगा। इस मोर्चे को लेकर कयास इसलिए तेज हैं क्योंकि विजय वर्डेतिवार ने यहां तक कह दिया है कि वह इस मसले पर कांग्रेस तक छोड़ने के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा कि यदि छगन भुजबल ओबीसी समाज का नेतृत्व करना चाहें तो मैं पार्टी छोड़कर आने को तैयार हूँ। इस मोर्चे की रैली में एक पीला झंडा भी फहराया गया।

करतारपुर गुरुद्वारा में नॉनवेज पार्टी पर विवाद, भड़के सिख

● मनजिंदर सिरसा बोले-सीईओ पद पर सिख की नियुक्ति हो, पहले भी जताई थी आपत्ति

अमृतसर (एजेंसी)। पाकिस्तान के नारोवाल स्थित श्री करतारपुर साहिब परिसर में हुई नॉनवेज और डॉस पार्टी पर विवाद गर्माता जा रहा है। एक बार फिर पाकिस्तान की परियोजना प्रबंधन इकाई के मुख्य कार्यकारी अधिकारी पद पर सिख की नियुक्ति की मांग उठने लगी है। भाजपा के सिख नेता और दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबंधक कमिटी के पूर्व अध्यक्ष मनजिंदर सिंह सिरसा ने स्पष्ट किया कि वे पहले ही इसके खिलाफ थे और आपत्ति भी उठाई गई थी। मनजिंदर सिरसा ने ट्वीट कर लिखा- हमने 2021 में करतारपुर कॉरीडोर के सीईओ के रूप में एक गैर-सिख व्यक्ति की नियुक्ति पर आपत्ति जताई थी। चूंकि प्रबंधन बोर्ड को सिख मर्यादा का कोई ज्ञान नहीं है, हमें उर था कि गुरुद्वारा परिसर में इशानिदा वाली हरकतें हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि हमारा उर सच में तब बदल गया जब सीईओ सैयद अबू बकर कुंशी का करतारपुर साहिब गुरुद्वारा परिसर में शराब पीने और मांस खाने का वीडियो वायरल हुआ। हम मुसलमानों के नेतृत्व वाले इस संगठन को तत्काल भंग करने की मांग करते हैं। जिनके कार्यों से दुनिया भर में सिखों की भावनाओं को ठेस पहुंची है।

30 प्रतिशत कमीशन वाली सरकार 30 नवंबर के बाद हो जाएगी विदा

तेलंगाना में केसीआर सरकार पर जमकर बरसे बीजेपी चीफ जेपी नड्डा



हैदराबाद (एजेंसी)। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने रविवार को भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने विधायकों पर तेलंगाना सरकार की दलित बंधु योजना में 30 प्रतिशत कमीशन वसूलने का आरोप लगाया। नड्डा ने कहा कि राज्य में के. चंद्रशेखर राव के नेतृत्व वाली सरकार को

आगामी विधानसभा चुनाव के बाद विदा किया जाना चाहिए। उन्होंने लोगों से उनकी पार्टी (भाजपा) को चुनने का आग्रह किया। नड्डा ने नारायणपेट और चेंबेला में रैलियों को संबोधित किया। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि कालेश्वरम सिंचाई परियोजना ने मुख्यमंत्री चंद्रशेखर राव के लिए एटीएम के रूप में काम किया और यह भ्रष्टाचार का प्रतीक बन गई। उन्होंने कहा, कालेश्वरम परियोजना की लागत, जो 38,00 करोड़ रुपये थी, आज बढ़कर 1.20 लाख करोड़ रुपये हो गई है। इसमें भी घोटाला हुआ।

बीजेपी का यूसीसी लाने और मुस्लिम कोटा हटाने का वादा

राम मंदिर की मुफ्त यात्रा भी, तेलंगाना के लिए भाजपा ने चला मास्टर स्ट्रोक

हैदराबाद (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी ने तेलंगाना विधानसभा चुनाव के लिए अपना घोषणापत्र जारी किया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने पार्टी का घोषणापत्र जारी करते हुए कहा कि बीजेपी तेलंगाना में समान नागरिक संहिता लागू करेगी, 4 प्रतिशत मुस्लिम कोटा खत्म होगा और अयोध्या में राम मंदिर की मुफ्त यात्रा कराई जाएगी। उन्होंने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने पिछले 70 वर्षों के दौरान राम मंदिर के निर्माण में बाधा डाली और देरी की। शाह ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंदिर का भूमि पूजन किया था और प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी 2024 को की जाएगी। शाह ने रैली में मौजूद लोगों से तेलंगाना में भाजपा की सरकार बनाने की अपील की और कहा कि पार्टी नित सरकार सभी लोगों को अयोध्या में भगवान राम के मुफ्त दर्शन कराने की व्यवस्था करेगी। तेलंगाना की 119 सदस्यीय विधानसभा के लिए 30 नवंबर को मतदान होगा और मतगणना 3 दिसंबर को होगी।

किसी को हर बार नहीं बुला सकते थाना, ये निजता का हनन

सर्विलांस रजिस्टर पर जम्मू-कश्मीर और लद्दाख हाईकोर्ट की दो टूक

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर और लद्दाख हाई कोर्ट ने पुलिस अधिकारियों से साफ-साफ कहा है कि सर्विलांस रजिस्टर में उपस्थिति दर्ज कराने के नाम पर किसी को भी बार बार थाने नहीं बुलाया जा सकता है। हाई कोर्ट ने नागरिकों के मौलिक अधिकार, उनकी स्वतंत्रता का सम्मान करने और वैध निगरानी सुनिश्चित करने के लिए सर्विलांस रजिस्टर में एंट्री की सख्ती से व्याख्या करने और उन्हें सीमित करने को कहा है। लाइव लॉ की एक रिपोर्ट के मुताबिक, जस्टिस जावेद इकबाल वानी ने कहा कि निगरानी के नाम पर किसी को भी व्यक्तिगत गरिमा से समझौता नहीं किया जाना चाहिए और निगरानी रजिस्टर में एंट्री और निगरानी नियमों को नियंत्रित करने वाले पुलिस अधिकारियों द्वारा इसमें आवश्यक सावधानी और देखभाल बरतनी चाहिए।



गाजा में बंधकों की रिहाई के लिए बंधी 'समझौते' की आस

● करीब पहुंचे हमारा और इजरायल, कुछ मुद्दों पर रूकी है बात ● कुछ मुद्दे सुलझे, कुछ पर दोनों पक्षों में नहीं बन पा रही सहमति



तेल अवीव (एजेंसी)। हमारा की कैद से इजरायल के कुछ बंधक जल्दी ही छूट सकते हैं। इजरायल के साथ इस पर उसकी डील फाइनल दौर में है। डील में सबसे पहले गाजा में हमारा बंधक बनाए गए लोगों में से 50 की रिहाई के बदले पांच दिनों के युद्धविराम पर बात चल रही है। जिसके बाद चीजों को आगे बढ़ाया जाएगा। हालांकि अभी तक समझौते का कोई फाइनल ड्राफ्ट तैयार नहीं हो पाया है लेकिन बताया गया है कि वार्ताकार मामले को सुलझाने के काफी नजदीक हैं। अगले कुछ दिन में इसका ऐलान भी हो सकता है। अमेरिका, इजरायल और हमारा के बीच इस समझौते में कतर अहम भूमिका निभा रहा है। सीएनएन ने मामले से जुड़े सूत्रों के आधार पर की गई रिपोर्ट में बताया है कि इस डील पर बीते कुछ दिन से बातचीत चल रही है। इसमें कुछ उतार चढ़ाव आए हैं लेकिन ये जारी है। सूत्रों का कहना है कि समझौते में अटक हुए बिंदुओं में कमियां दूर होनी शुरू हो गई हैं और समझौते में अभी भी कुछ दिन लग सकते हैं। डिप्टी नेशनल सिक्योरिटी सलाहकार जॉन फाइनर ने इस समझौते पर अहम जानकारी देते हुए कहा कि हम शायद एक बिंदु पर पहुंचने के बहुत करीब हैं। ये वार्ता हफ्तों पहले शुरू हुई थी और काफी बेहतर तरीके से आगे बढ़ी है। फाइनर ने भी ज्यादा ब्यौरा नहीं देते हुए कहा कि अभी कोई अंतिम समझौता नहीं हुआ है। सीएनएन को समझौते बारे में जानकारी देने वाले सूत्रों ने कहा है कि ये वार्ता काफी कठिन रही है। बार-बार इसमें कई तरह के पेंच फंसे हैं।

सागर के गढ़ाकोटा पहुंचे पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह

- रहली सीट से कांग्रेस प्रत्याशी पर हमले की घटना की जानकारी ली, कार्यकर्ताओं से की बात



सागर (नप्र)। सागर की रहली विधानसभा के गढ़ाकोटा में शनिवार शाम हुए बवाल के मामले में रविवार रात पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह गढ़ाकोटा पहुंचे। उन्होंने घटनास्थल पर पहुंचकर घटनाक्रम की जानकारी ली। जिसके बाद वे रेस्ट हाउस पहुंचे। जहां उन्होंने कांग्रेस कार्यकर्ताओं से बात कर घटनाक्रम की हकीकत को जाना। इस दौरान उनके साथ रहली विधानसभा सीट से कांग्रेस प्रत्याशी ज्योति पटेल और अन्य समर्थक मौजूद थे। देर रात तक वह कांग्रेस प्रत्याशी, जिले के पार्टी पदाधिकारियों से चर्चा करते रहे। दरअसल, शनिवार शाम को गढ़ाकोटा के गुंजोरा में चुनावी रजिष्ट्र को लेकर दो गुटों के बीच विवाद हुआ था। जिसमें जमकर मारपीट हुई। वहीं कई वाहनों में तोड़फोड़ की गई थी। घटनाक्रम को लेकर कांग्रेस प्रत्याशी ज्योति पटेल ने वीडियो जारी कर भाजपा प्रत्याशी गोपाल भार्गव पर हमला करवाने का आरोप लगाया था। उन्होंने कहा कि था गोपाल भार्गव के गुंडे ने मुझ पर हमला किया है। गाड़ियों में तोड़फोड़ कर रहे हैं। हमारी कोई सुन नहीं रहा है। जान को खतरा है। हालांकि घटनाक्रम की सूचना मिलते ही भारी पुलिस बल मौके पर पहुंचा और मामला शांत कराया था। पुलिस मामले में उपद्रव करने वाले आरोपियों की शिनाख्त कर कार्रवाई करने में जुटी हुई है।

गोपाष्टमी पर उत्साह का माहौल

गायों और बछड़ों को मेहंदी लगाकर महाआरती, भंडारे का आयोजन

शाजापुर (उज्जैन/नप्र)। जिले में ग्राम भिलवाड़िया गांव में एबी रोड किनारे स्थित द्वारकाधीश गौशाला में गोपाष्टमी धूमधाम से मनाई गई। धार्मिक और सनातनी मान्यता है कि, कार्तिक शुक्ल पक्ष अष्टमी तिथि को भगवान श्री कृष्ण ने गो-चारण लीला आरंभ की थी। इस दिन बछड़े सहित गाय का पूजन करने का विधान है।



इस दिन को सनातनी लोग गोपाष्टमी के तौर पर बड़ी धूमधाम और उत्साह से मनाते हैं। सोमवार को द्वारकाधीश गौशाला में भी गोपाष्टमी पर गायों और बछड़ों को मेहंदी लगा कर सजाया गया और फिर धूमधाम से गो-माता की विधि विधान से पूजा-अर्चना कर महा आरती और भंडारे का आयोजन किया गया।

जिसने ग्राम भिलवाड़िया और आसपास के श्रद्धालु बड़ी संख्या में पहुंचे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कथावाचक श्री बृज किशोर जी नागर सोमेश्वर महादेव मंदिर के पुजारी श्री सतोष पुरी जी महाराज, भाजपा प्रत्याशी अरुण भीमावत भाजपा जिला महामंत्री दिनेश शर्मा, गोपाल सिंह राजपूत, रुद्रपुरी जी महाराज, राम जानकी दास जी महाराज, गोशाला संचालक नरेंद्र सिंह जादौन, जन अभियान परिषद और गोशाला समिति के सदस्य महेन्द्र वर्मा, मनोहर सिंह सिसोदिया समेत अन्य श्रद्धालु शामिल हुए।

राम रसोई योजना भोपाल की पहली वर्षगांठ

लोगों को परोसा गया पूड़ी हलवा, अध्यक्ष ने दी सभी को शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। जय मां वैष्णो दुर्गा उत्सव (श्री राम रसोई) समिति बिट्टन मार्केट हाट बाजार व्यापारी संघ भोपाल ने सोमवार को अपनी पहली वर्षगांठ मनाई। इस मौके पर लोगों को आज दाल, चावल, पूड़ी



और हलवा परोसा गया। इस मौके पर समिति के अध्यक्ष हरिओम खटीक ने सभी सदस्यों को शुभकामनाएं दीं। अध्यक्ष खटीक ने बताया कि यह सेवा पिछले 1 वर्ष से समिति के सदस्यों द्वारा सुचारु रूप से चलाई जा रही है। उन्होंने आगे बताया कि यहां लगभग 700 से 800 लोग नियमित भोजन करते हैं। समिति के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं के सहयोग से समय समय पर कई आयोजन भी किए जाते हैं जिसमें स्वादिष्ट पकवान लोगों को परोसा जाता है।

राम रसोई सुबह 9 बजे से दोपहर 2 बजे तक चलती है। विशेष मौकों पर यहां पकवान भी बनाए जाते हैं। रोटी बनाने के लिए यहां रोटी मशीन भी लगाई गई है, जिसे समिति के सदस्य ही चलाते हैं।

म.प्र.कांग्रेस ने गड़बड़ी करने वाले अफसरों के नाम मांगे

प्रत्याशियों को भेजा लेटर, कहा- 30 नवंबर तक भेजें जानकारी

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश कांग्रेस ने अपने प्रत्याशियों से चुनाव में गड़बड़ी करने वाले अधिकारी-कर्मचारियों के नाम मांगे हैं। कांग्रेस ने रविवार को प्रत्याशियों के नाम भेजे पत्र में कहा है कि मतदान के दिन प्रदेश कांग्रेस के कंट्रोल रूम में कुछ अधिकारी-कर्मचारियों को लेकर नियम विरुद्ध कार्य करने की बात सामने आई थी। जिसमें भाजपा को लाभ पहुंचाने संबंधी शिकायतें मिली थी। पत्र में लिखा कि आपके विधानसभा क्षेत्र में भी इस तरह का कार्य किया गया है तो संबंधित अधिकारी-कर्मचारी का नाम, पद सहित पूरी जानकारी 30 नवंबर तक प्रदेश कांग्रेस कार्यालय भेजें। इससे पहले शनिवार को प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ भी कह चुके हैं कि वह प्रत्याशियों से रिपोर्ट मंगवा रहे हैं कि अधिकारियों का चुनाव में क्या रूख रहा?

इन जिलों से मिली शिकायतें

छतरपुर - छतरपुर जिले की राजनगर विधानसभा सीट पर कांग्रेस प्रत्याशी विक्रम सिंह नातीराजा के ड्राइवर सलमान खान की हत्या के बाद एफआईआर दर्ज करने में देरी की और आरोपियों की गिरफ्तारी नहीं होने को लेकर कांग्रेस नाराज है।

भिंड - अंतर विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस के बृथ एजेंट का घर जलाए जाने के मामले में पुलिस ने कार्रवाई करने में देरी की। कांग्रेस का आरोप है कि मंत्री अरविंद भदौरिया के कहने पर पुलिस आरोपियों को संरक्षण दे रही है।

सागर - कांग्रेस का आरोप है कि सुरखी विधानसभा क्षेत्र में मतदान के दिन अफसरों ने बीजेपी के उम्मीदवार के प्रेशर में काम किया। रहली विधानसभा क्षेत्र में कांग्रेस



प्रत्याशी ज्योति पटेल के वाहनों में तोड़फोड़ की गई। उन पर जानलेवा हमला किया गया। कांग्रेस का आरोप है कि मामले में पुलिस मंत्री गोपाल भार्गव के दबाव में काम कर रही है।

हरदा - टिमरनी विधानसभा में मतदान के दिन एक टीआई ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को मतदान स्थल के पास मतदाता पर्वी वितरण के लिए टेबल नहीं लगाने दी।

सतना - रामपुर बघेलान विधानसभा में मंत्री रामखेलावन पटेल के कहने पर पुलिस

कांग्रेस कार्यकर्ताओं को परेशान कर रही थी। ● सज्जन सिंह वर्मा बोले- कमलनाथ बनवा रहे सूची- पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा ने कहा है कि म.प्र. कांग्रेस कमेटी

के अध्यक्ष कमलनाथ अधिकारियों और कर्मचारियों की सूची बनवा रहे हैं।

भाजपा का हथियार बनकर काम करने वाले अधिकारी-कर्मचारी भी लोकतंत्र के हत्यारे हैं। रणनीति बनाएंगे कि इनके साथ कैसा व्यवहार हो, कहाँ पद स्थापना की जाए। अफसरों-कर्मचारियों की सारी सूची कमलनाथ के पास आती जा रही है। एक-दो दिन में सारे लोगों के नाम आ जाएंगे।

कांग्रेस विधायक नाती राजा समेत 12 लोगों पर एफआईआर

- वोटिंग के दिन बीजेपी प्रत्याशी पर जानलेवा हमले का आरोप

छतरपुर(नप्र)। छतरपुर के राजनगर से विधायक और कांग्रेस प्रत्याशी विक्रम सिंह नाती राजा समेत 12 लोगों के खिलाफ हत्या का प्रयास समेत कई धाराओं में केस दर्ज किया गया है। भाजयुमो जिला अध्यक्ष धीरज चतुर्वेदी के शिकायती आवेदन पर पुलिस ने सोमवार को ये कार्रवाई की। शिकायत के मुताबिक वोटिंग वाले दिन नाती राजा और उनके समर्थकों ने उन पर जानलेवा हमला किया था।

17 नवंबर को कांग्रेस प्रत्याशी विक्रम सिंह नाती राजा, उनके समर्थकों और भाजपा प्रत्याशी अरविंद भदौरिया, उनके समर्थकों के बीच विवाद हो गया था। इस दौरान कांग्रेस प्रत्याशी विक्रम सिंह नाती राजा की गाड़ी चला रहे पार्षद की गाड़ियों से कुचलने से मौत हो गई थी। घटना वाले दिन कांग्रेस प्रत्याशी ने भाजपा प्रत्याशी अरविंद पटेरिया सहित 21 लोगों पर हत्या का केस दर्ज कराया था।

सोमवार दोपहर में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा छतरपुर कलेक्टर संदीप जीआर और एसपी अमित सांघी से मिले। उन्हें ज्ञापन भी दिया। उनका आरोप है कि राजनीतिक लाभ लेने के लिए नाती राजा ने अपने ही ड्राइवर की बलि दी है। एसपी अमित सांघी ने बताया कि कांग्रेस प्रत्याशी समेत अन्य पर हत्या के प्रयास समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज किया है। यह केस 17 तारीख को सुबह 3 से 4 बजे के बीच विवाद हुआ था, उसे लेकर है। दोनों ही मामलों में निष्पक्ष जांच करवाई जा रही है।

चुनाव प्रभावित करने भाजपाइयों पर आरोप लगाया- वीडि

वीडी शर्मा ने कहा कि 17 नवंबर की सुबह 3-4 बजे की घटना की जानकारी पुलिस को सुबह 6 बजे दी गई। पुलिसवालों से कहा कि पार्षद सलमान की हत्या हो गई है। राजनीतिक लाभ के लिए नाती राजा ने एक मुस्लिम भाई की हत्या कर दी। आरोप लगाया कि भाजपा के लोगों ने हत्या की, जिससे चुनाव को प्रभावित किया जा सके।

बच्चे को अगरबत्ती से 51 जगह दागा

सांस लेने में तकलीफ और पेट फूलने की समस्या थी; हालत गंभीर

शहडोल (नप्र)। शहडोल में निमोनिया से पीड़ित डेढ़ महीने के एक बच्चे को अगरबत्ती से 51 जगह जला दिया गया। बच्चे को सांस लेने में दिक्कत हो रही थी। उसका पेट भी फूल गया था। परिजन ने इलाज के लिए एक हकीम को बुलाया तो उसने पेट, सिर, माथे, पैर और कंधे पर दाग दिया।

बच्चे की हालत बिगड़ी, तो परिजन इलाज के लिए जिला अस्पताल ले गए। उसकी हालत गंभीर देखकर डॉक्टरों ने मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। बच्चा एसएनसीयू में भर्ती है। उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। मामला बाल अधिकार संरक्षण आयोग पहुंच गया है। शहडोल के हर्दी गांव के रहने वाले प्रेमलाल बैगा ने बताया कि बेटे प्रदीप की तबीयत खराब थी। उनकी गैर मौजूदगी में घर के बुजुर्गों ने एक हकीम को बुलाया था। हकीम ने बेटे को अगरबत्ती से 51 बार दाग दिया। मेडिकल कॉलेज के अधीक्षक डॉ. नागेंद्र सिंह ने बताया कि बच्चे को

निमोनिया हुआ था। परिजन ने अंध विश्वास के चलते उसे अगरबत्ती से दागाया है। नजदीकी अस्पताल में कोई सुविधा न होने पर उसे समुचित इलाज भी नहीं मिल सका। मासूम को लगभग 15 दिन पहले दागा गया है। उसके कुछ घाव भर गए हैं, कुछ अभी भी हैं। इस मामले की जानकारी स्थानीय प्रशासन को दी गई है।

आयोग ने जांच के निर्देश दिए- मध्यप्रदेश बाल अधिकार संरक्षण आयोग की सदस्य मेधा पवार ने बताया कि इस मामले में जांच के निर्देश दिए हैं। जल्द ही दोषियों पर कड़ी कार्रवाई होगी। निमोनिया होने पर बच्चों को सांस लेने में समस्या आती है, तो आदिवासी इलाकों में उनको अमूमन आग से दागा देते हैं। बताया गया कि हर्दी गांव में सीएचओ और एएनएम हैं, लेकिन सही समय पर मासूम को मॉनिटरिंग ना होने की वजह से दिक्कत बढ़ गई। ऐसे में परिजन ने उसे दागा दिया, जिसकी वजह से उसकी हालत गंभीर बनी हुई है।



छठ महापर्व पर सूर्य उपासना

व्रत करने वाली महिलाओं ने उगते सूर्य को दिया अर्घ्य, हनुमान मंदिर घाट पर गूंजे भोजपुरी गीत



भोपाल (नप्र)। स्वामी विवेकानंद परिसर कटारा हिल्स भोपाल के हनुमान मंदिर स्थित छठ घाट पर सोमवार सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य देकर व्रत करने वाली महिलाओं ने महापर्व का समापन किया। लोक आस्था के इस पर्व पर रविवार शाम को श्रद्धालुओं ने अस्त होते सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य भगवान और छठ मैया से सौभाग्य और खुशहाली के लिए प्रार्थना की थी। इस मौके पर सुप्रसिद्ध भोजपुरी लोक गायक मुन्ना गिरी के छठ गीतों ने समां बांध दिया।

महिलाओं ने बांस की डलिया और सुप में रखे भोग और पूजन सामग्री को छठ मैया और सूर्यदेव को अर्पित किया। समाज के लोग ढलते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए रविवार शाम 4 बजे बड़ी संख्या में घाट

पर पहुंचे, जहां व्रतियों ने पहले वेदी का पूजन किया और उसके बाद घाट में उतरकर अस्त होते सूर्य को अर्घ्य देकर सभी ने छठ मैया से खुशहाली की प्रार्थना की। सोमवार सुबह श्रद्धालुओं ने उगते सूर्यदेव को अर्घ्य देकर व्रत का पारण किया। कटारा हिल्स समेत शहर के लगभग 50 घाटों पर व्रतधारण करने वाली महिलाओं ने पूजन-पाठ किया। रविवार को सबसे ज्यादा भीड़ शीतलदास की बगिया में थी। समिति के अध्यक्ष अशोक पुरी ने बताया कि इस बार समिति ने भोजपुरी गायक मुन्ना गिरी को बक्सर बिहार से बुलाया था। जिनके लोकगीतों पर लोग जमकर झूमें। उन्होंने आगे बताया कि घाट पर लगभग 500 दीए जलाए गए। समिति ने पूजा करने आ रहे श्रद्धालुओं के लिए विशेष इंतजाम भी किए थे।

नरेला भोपाल में नारी जागरण एवं दीपयज्ञ का कार्यक्रम आयोजित

- वक्ताओं ने वीरगनाओं की गाथा सुनाकर महिलाओं से कहा राष्ट्र उत्थान के लिए काम करें

भोपाल (नप्र)। सुरभि परिसर नरेला में गायत्री परिवार ने नारी जागरण एवं दीपयज्ञ कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें देवास और भिंड की वक्ता लिखा चौहान और सुपर्णा श्रीवास्तव सहित बड़ी संख्या में सदस्य शामिल हुए। यह कार्यक्रम गुरुमाता भगवती देवी शर्मा की जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में निकाली जा रही उपयात्रा के अंतर्गत गायत्री परिवार ट्रस्ट बरखेड़ा ने आयोजित किया। कार्यक्रम में शामिल महिलाओं ने मां गायत्री की पूजा और दीपयज्ञ किया। इसके बाद लेखा चौहान ने भारत

की वीरगनाओं की गाथा सुनाते हुए महिलाओं से संस्कृति की रक्षा और राष्ट्र उत्थान के लिए काम करने को कहा। सुपर्णा श्रीवास्तव ने नारियों के सशक्तिकरण की सलाह दी और पाश्चात्य संस्कृति से खुद को और अपने परिवार को दूर रखने की सलाह दी। उन्होंने भारतीय संस्कृति के देव परिवार के युग ऋषि पंडित श्रीराम शर्मा के सुत्रों से अवगत कराया। गायत्री शक्तिपीठ से पहुंची मधु श्रीवास्तव ने आओ गणो संस्कार बान पीढ़ी की जानकारी दी, तो सुरेश श्रीवास्तव ने दीपयज्ञ का कार्यक्रम कराया। सुरभि परिसर के स्थानीय निवासी एचएस श्रीवास्तव एवं अमिता श्रीवास्तव इस कार्यक्रम के मुख्य स्रोत रहे। उप जॉन प्रभारी आरपी हजारी एवं गायत्री प्रज्ञा पीठ के मुख्य प्रबंधक शिवनारायण सिंह राजपूत ने आभार व्यक्त किया।



संपादकीय

'हलाल' पर बैन के मायने

लगता है उत्तर प्रदेश में योगी सरकार द्वारा 'हलाल' पर रोक नया राजनीतिक मुद्दा बनने वाला है। राज्य सरकार ने मांसाहारी व शाकाहारी उत्पादों पर हलाल के सर्टिफिकेट बांटने पर रोक लगा दी है। शिकायत कर्ता शैलेन्द्र कुमार शर्मा की शिकायत में हलाल ट्रस्ट सहित आठ एजेंसियों के खिलाफ कथित तौर पर 'फ़र्जी' और 'गैर-कानूनी' तरीके से हलाल सर्टिफिकेट बांटने का आरोप लगाया गया है। लेकिन इससे भी गंभीर आरोप यह है कि हलाल सर्टिफिकेट से जो पैसा हलाल सर्टिफिकेट से कमाया जा रहा है, वो देश विरोधी कामों में खर्च हो रहा है। इस आरोप के पीछे क्या प्रमाण है, यह अभी स्पष्ट नहीं है, लेकिन इस आदेश ने देश में साम्प्रदायिक ध्वनीकरण की नई रेखा खींचना शुरू कर दिया है। उधर पुलिस ने हलाल सर्टिफिकेट देने वाली कुछ कंपनियों के खिलाफ अवैध तरीके से यह प्रमाण पत्र देने का मामला भी दर्ज किया गया है। जिन उत्पादों पर सरकार ने हलाल सर्टिफिकेट बैन किया है, उनमें खान-पान से लेकर ब्यूटी प्रॉडक्ट्स तक शामिल हैं। सरकार के आदेश के अनुसार अब यूपी में हलाल सर्टिफाइड प्रॉडक्ट्स का निर्माण, बिक्री और भंडारण अवैध हो गया है। ऐसा पाए जाने पर संबंधित फर्म (व्यक्ति) के खिलाफ औषधि और प्रसाधन सामग्री कानून के तहत सख्त कार्रवाई की जाएगी। यहाँ सवाल उठता है कि हलाल सर्टिफिकेट के मायने क्या हैं, कौन यह प्रमाणपत्र देता है और ऐसे प्रमाण पत्र की वैधता क्या है? आमतौर पर हलाल सर्टिफिकेशन मीट और नॉन-मीट दोनों तरह के उत्पादों के लिए दिया जाता है। हलाल सर्टिफाइड का मतलब है कि खाने वाला प्रोड्युक्ट शुद्ध है और इस्लामी कानून के अनुरूप तैयार किया गया है। इसमें हराम सामग्री जैसे कि मरे हुए जानवर या सूजा का कोई हिस्सा आदि शामिल नहीं है। कुछ शाकाहारी मिश्रणों भी इसमें शामिल हैं। चूँकि भारत से बड़ी मात्रा में खाद्य प्रोड्युक्ट्स का निर्यात सिंगापुर, मलेशिया, खाड़ी देशों और कई अंतरराष्ट्रीय बाजारों में होता है, जबकि बड़ी संख्या में इस्लामिक आबादी है। ऐसे में देश की अधिकतर कंपनियाँ अपने प्रोड्युक्ट के लिए 'हलाल सर्टिफिकेशन' करवाती हैं। लेकिन भारत में हलाल प्रमाण पत्र देने के लिए कोई रजिस्टर्ड संस्था नहीं है। कुछ निजी कंपनियाँ और एजेंसियाँ व्यक्तिगत तौर पर कंपनियों को हलाल सर्टिफिकेट मुहैया कराती हैं। एक कंपनी हलाल इंडिया अपनी वेबसाइट पर दावा करती है कि वह किसी भी प्रॉड्युक्ट को लैब टेस्टिंग और कई तरह के ऑडिट के बाद ही हलाल सर्टिफिकेट देती है। चेन्नै की हलाल इंडिया, दिल्ली की जमीयत उलमा-ए-हिंद हलाल ट्रस्ट और मुंबई की हलाल काउंसिल ऑफ इंडिया भी हलाल सर्टिफिकेट बांटती हैं। उधर जमीयत उलमा-ए-हिंद हलाल ट्रस्ट ने इन आरोपों को 'बेतुका' बताते हुए कहा कि ये उनकी छवि बिगाड़ने की कोशिश है। ट्रस्ट इस तरह की भ्रामक जानकारीयों के खिलाफ कानूनी कदम उठाएगा। उन्होंने यह भी कहा कि ट्रस्ट सभी तरह के सरकारी नियमों का पालन करता है। ट्रस्ट के अनुसार विश्व में हलाल उत्पादों का बाजार 3.5 ट्रिलियन डॉलर का है और मुस्लिम देशों में इनके निर्यात से भारत को भी लाभ होता है। यहाँ सवाल यह है कि हलाल सर्टिफिकेट देने के लिए अभी तक सरकार ने कोई कानूनी संस्था क्यों नहीं बनाई है? हलाल पत्र बांटने वाली निजी कंपनियों पर बैन लगाने के साथ साथ सरकार को इस व्यवसाय के नियमन के लिए जरूरी कानून और संस्थाएँ बनानी चाहिए उनका पालन सुनिश्चित करना चाहिए ताकि संदेह की सुई को हटाया जा सके। हलाल का मामला मुस्लिम धार्मिक आस्था से जुड़ा है। ऐसे में सरकार को चाहिए कि वह इसे गंभीरता से लेकर हलाल प्रमाण पत्र की वैधता को भी स्थापित करे।

राजनीति

जावेद अनिस

लेखक स्तंभकार हैं।



मध्यप्रदेश को भाजपा के सबसे मजबूत किलों में से एक माना जाता है, यहाँ जनसंघ के जमाने से ही उसका अच्छा-खासा प्रभाव है। यहाँ उसके शिवराजसिंह चौहान जैसे मजबूत क्षत्रप पिछले 18 सालों से प्रदेश की सत्ता में शोष पर बने हुये हैं। दूसरी तरफ कांग्रेस है जो लगातार हार की हैट्टिक बनाने के बाद 2018 में सत्ता वापसी में सफल रही थी लेकिन 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया के कांग्रेस छोड़ने के कारण राज्य में फिर से बीजेपी की सरकार बन गई थी। इस प्रकार पंद्रह साल बाद सत्ता में लौटी कांग्रेस पंद्रह महीने ही चल पायी वहीं भाजपा की जोड़-तोड़ के सहारे फिर से वापसी हो गयी थी।

2023 के विधानसभा चुनाव में एक बार फिर दोनों पार्टियाँ आमने-सामने हैं, लेकिन मुकाबला इतना करीबी लग रहा है कि बड़े से बड़ा चुनावी विश्लेषक ठोस भविष्यवाणी करने की स्थिति में नहीं है।

मोदी के खड़ाऊ के सहारे भाजपा का चुनावी अभियान— करीब 18 साल मुख्यमंत्री रहने के बावजूद शिवराज सिंह चौहान को उनकी पार्टी ने मुख्यमंत्री का चेहरा घोषित नहीं किया है बल्कि वो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ रही है, इसे सामूहिक नेतृत्व का नाम दिया जा रहा है। पार्टी कह रही है कि मुख्यमंत्री कौन होगा यह चुनाव के बाद तय होगा। पार्टी में करीब आधा दर्जन मुख्यमंत्री के दावेदार नजर आ रहे हैं उनमें शिवराज भी एक हैं।

बहरहाल 'एमपी के मन में मोदी, मोदी के मन में एमपी' भाजपा का केन्द्रीय चुनावी नारा है। इस नारे को अमली जामा पहनाने के लिए पार्टी ने अपनी पूरी ताकत खोंक दी है। इस विधानसभा चुनाव में भाजपा ने अपने 7 सांसदों को मैदान में उतारा है जिसमें दिमनी से नरेंद्र सिंह तोमर, नरसिंहपुर से प्रह्लाद पटेल, निवासे से फगन सिंह कुलस्ते जैसे केन्द्रीय मंत्री और बाकी सांसदों में रीति पाठक, राकेश सिंह, राव उदयप्रताप और गणेश सिंह शामिल हैं। इस भारी भरकम सूची में भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय का नाम भी है जिन्हें इंदौर की एक विधानसभा सीट से उतारा गया है। जाहिर है भाजपा यह चुनाव शिवराज नहीं बल्कि केन्द्रीय नेतृत्व की छाया में लड़ रही है जिसमें अगर भाजपा जीतती है तो श्रेय के साथ मुख्यमंत्री भी मोदी के परपद का होगा और अगर भाजपा हारती है तो इसका ठीकरा शिवराज के सर ही फूटेगा।

'फोनिक्स' शिवराज— भाजपा के अंदरूनी जानकार कहते हैं कि इस चुनाव के बाद शिवराज को साइड लाइन करने की पूरी तैयारी कर ली गयी है। लेकिन शिवराज अपनी पॉजिशन छोड़ने को तैयार नहीं है वे इस प्रकार से खूंट गाड़ कर बैट गये हैं कि उन्हें हिलाना मुश्किल है। चूँकि इस बार भाजपा उनके चेहरे पर

क्या 'फोनिक्स' बनकर उभरेंगे शिवराज?

चुनाव नहीं लड़ रही है इसलिए उन्हें भी इस बात का अंदाज है कि अगर जीत होती है तो भी इस बार उनका मुख्यमंत्री बनना मुश्किल होगा लेकिन इसके बावजूद भी वे अपनी तरफ से खुद को मुख्यमंत्री के दावेदार के तौर पर ही पेश कर रहे हैं और जनता के बीच जाकर खुद को सीएम बनाने के लिए वोट मांग रहे हैं। इस पूरे चुनाव में एक तरफ भाजपा का चुनावी अभियान, जो प्रधानमंत्री के चेहरे और सामूहिक नेतृत्व के सहारे

नहीं हो सका है। हालाँकि उन्हें केवल बाहर से ही नहीं बल्कि भाजपा के अंदर से भी घेरने की कोशिश की गयी है फिर भी वे हर चुनौती से पार पाने में कामयाब रहे हैं।

इसलिये इस बार के विधानसभा चुनाव में अगर भाजपा हारती भी है तो शिवराज बने रहेंगे। मध्यप्रदेश में भाजपा को धीरे-धीरे शिवराज सिंह चौहान के आभामंडल से बाहर किया जा रहा है लेकिन फिलहाल पार्टी के पास



चलाया जा रहा है वहीं दूसरी तरफ शिवराज सिंह चौहान का अपना चुनावी अभियान है जिसमें वे खुद को चेहरा और भावी मुख्यमंत्री बताते हुये कह रहे हैं कि 'पहले लाइली लक्ष्मी योजना बनाई, फिर लाइली बहना योजना बनाई अब मेरा यह संकल्प है कि हर बहन को 'लक्ष्मि बहना' बनाऊंगा'.

शिवराज सिंह चौहान को भाजपा के सबसे मजबूत और लोकप्रिय मुख्यमंत्रियों में से एक यूँ ही नहीं माना जाता है, वे भाजपा के उन चुनिन्दा मुख्यमंत्रियों में शामिल हैं जो पार्टी में मोदी-शाह के वर्चस्व के इस दौर में भी अपनी अलग पहचान और जमीन को बचाये रखने में कामयाब रहे हैं। पिछले करीब दो दशकों के दौरान प्रदेश भाजपा संगठन में उनके समकक्ष कोई दूसरा नेता खड़ा

मध्यप्रदेश में शिवराज के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है। इसलिए हार हो या जीत उनकी सारी जद्दोजहद हिंदी हृदय प्रदेश की जमीन पर अपने पकड़ और प्रासंगिकता बनाये रखने की होगी। अपने एक चुनावी भाषण में खुद की तुलना 'फोनिक्स पक्षी' करते हुये जब वे कहते हैं कि 'अगर मैं मर भी गया तो राख के ढेर में से फोनिक्स पक्षी की तरह दोबारा उठ खड़ा हो जाऊंगा', तो भले ही उनके निशाने पर कांग्रेस रही हो लेकिन उनका इरादा साफ़ नजर आता है।

कमलनाथ को 'खुला हाथ'— मध्यप्रदेश में पहली बार कांग्रेस इतना केन्द्रित होकर चुनाव लड़ रही है। ज्योतिरादित्य सिंधिया के कांग्रेस छोड़ने के बाद ऐसा लगता है कि कमलनाथ के सामने सारे क्षत्रप

नेपथ में चले गये हैं। कहने को तो कमलनाथ और दिग्विजय सिंह की जोड़ी को जय और वीरू की जोड़ी बताया जा रहा है लेकिन दिग्विजय सिंह की भूमिका भी परदे के पीछे ही है। कांग्रेस की तरफ से अकेले कमलनाथ ही मैदान में नजर हैं। इस बार चेहरा, रणनीति सब कुछ उन्हीं का है। कुलमिलाकर मध्यप्रदेश में उन्हें 'खुला हाथ' मिला हुआ है और खुद आलाकमान भी उनके हिसाब से काम करने की कोशिश कर रहा है।

कांग्रेस की तरफ से मुख्यमंत्री पद के वे अकेले दावेदार है जिनके मुकाबले ना तो कांग्रेस और ना ही भाजपा में कोई चेहरा है और इस बार के चुनाव में यही सबसे बड़ी ताकत थी है। पिछली बार के चुनाव की तरह इस बार भी उन्होंने वचन पत्र जारी किया है जिसमें लोक लुभावन वादों की भरमार है।

मई 2018 में मध्यप्रदेश में प्रदेश अध्यक्ष के तौर पर कमलनाथ के आने के बाद से कांग्रेस लगातार नरम हिन्दुत्व के रास्ते पर आगे बढ़ी है और इस दौरान विचारधारा के स्तर पर वो भाजपा की 'बी टीम' नजर आती है। पिछले दिनों कमलनाथ ने अपने एक इंटरव्यू में राममंदिर का श्रेय कांग्रेस को देते हुए कहा है कि राजीव गांधी ने मंदिर का ताला खुलवाया था, अपने चुनावी तैयारियों के तहत वे बागेश्वर धाम के धीरेंद्र शास्त्री के कई कार्यक्रम भी करा चुके हैं।

जंत किस करवट बैठेगा?— चुनाव से कुछ ही महीनों पहले शिवराज सिंह चौहान की सरकार द्वारा 'लाइली बहना योजना' की घोषणा की गयी है और पूरे चुनावी अभियान के दौरान भाजपा का सारा जोर अपने 18 साल के शासन की उपलब्धियों को बताने के बजाये इस नये नवेली योजना के प्रचार और उसका श्रेय लेने में रहा है। शायद भाजपा मध्यप्रदेश में अपने 18 साल के शासन की किसी एक उपलब्धि और चेहरे को पेश कर पाने की स्थिति में है इसलिए उसका जोर 'मोदी के चेहरे, राम मंदिर और लाइली बहना योजना' पर है।

हालाँकि गृह मंत्री अमित शाह मध्यप्रदेश को बीमारू राज्य से बेमिसाल राज्य बनाने का दावा करते हैं लेकिन इसपर ज्यादा जोर नहीं दिया गया है। मध्यप्रदेश में असल मुद्दों की कमी नहीं है जिसपर ध्यान देने की जरूरत है, जैसे कि प्रदेश में अर्थव्यवस्था की हालत बहुत पतली है लेकिन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 'राजस्थान में कांग्रेस को चुना तो सर तन से जुदा के नारे लगे, अब मध्यप्रदेश को बचाना है' जैसी बातें कइकर ध्यान कही और ले जाने की कोशिश की गयी है।

बहरहाल मुकाबला बहुत दिलचस्प और करीबी है, आगामी तीन दिसंबर के नतीजे ना केवल मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री का नाम तय करेंगे बल्कि इससे दोनों प्रमुख पार्टियों के अंदरूनी समीकरण भी नये निररे से तय होने वाले हैं।

क्रिकेट

विजय रांगणेकर

(लेखक पूर्व बैंक अधिकारी व वरिष्ठ खेल समीक्षक हैं)



ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट यानि अटूट मनोबल और उन्मुक्त खेल

आबादी के लिहाज से छोटे से देश-ऑस्ट्रेलिया ने यूँ तो टेनिस, गोल्फ, तैराकी, बिलियार्ड्स, बाक्सिंग और एथलेटिक्स में एक से बढ़कर एक विश्वस्तरीय खिलाड़ी दिए हैं, किन्तु सही रूप से क्रिकेट ने ही ऑस्ट्रेलिया को एक खेल राष्ट्र का दर्जा दिलाया है। क्रिकेट ने ही ऑस्ट्रेलियावासियों में राष्ट्रियता की भावना पैदा की है। विक्टोरिया, न्यू

साऊथ वेल्स, क्वीन्सलैंड, तस्मानिया, साऊथ आस्ट्रेलिया और वेस्टर्न आस्ट्रेलिया- ये छः राज्य किसी जमाने में अपनी विशिष्ट पहचान बनाये रखने को आतुर थे। लेकिन क्रिकेट ने इनमें भावनात्मक एकता की बुनियाद रखी।

राजनितिक दृष्टि से एक राष्ट्र के रूप में उभरने के पूर्व ही

ऑस्ट्रेलिया में राष्ट्रीय भावना के संस्कार क्रिकेट के जरिये पड़ चुके थे। 21 अगस्त 1882 को 'ऐरोश' का इतिहास रचा गया, जब ऑस्ट्रेलिया की नौरिखिया समझी जाने वाली टीम ने इंग्लैंड को उसी के मैदान पर हराकर एक सर्वथा दुर्लभ कीर्तिमान बनाया। यह काम ऑस्ट्रेलिया के खिलाड़ियों ने किया था न कि विक्टोरिया या साऊथ वेल्स के खिलाड़ियों ने।

बस यही एहसास था जिसने खिलाड़ियों को भावनात्मक रूप से एकजुट कर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया। अपना देश छोड़कर भाग्य आजमाने के लिए दूरस्थ प्रदेशों में जाकर बसने वाले स्वभाव से ही साहसी और निर्भीक होते हैं। उनकी विशेषता जीवतता, संघर्ष और जीत की लालसा रही है।

जय पराजय, संघर्ष और विकास के लम्बे दौर से गुजरने वाली ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट की परम्परा काफी प्रतिष्ठित और गौरवपूर्ण रही है। प्रथम टेस्ट, शताब्दी टेस्ट, टाई टेस्ट, विश्व विजेता जैसी गवौली उपलब्धियों को इतिहास में समेटे अनेक चमत्कारिक और प्रतिभा संपन्न खिलाड़ियों का विलक्षण प्रदर्शन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि दुनिया के क्रिकेट नक्षत्र पर प्रत्येक समय पर ऑस्ट्रेलिया का विशिष्ट सम्मानजनक स्थान रहा है। ये बात नहीं कि ऑस्ट्रेलिया टीम ने उतार-चढ़ाव नहीं देखे। वे कई बार हारे और काफी घुरी तरह हारे लेकिन हारते रहने की अवधि कभी भी लम्बी नहीं रही। उनके खेल में एक जुझारूपन, नैसर्गिक प्रतिभा, किलर इंसिस्टेंट और जीत के लिए अंत तक संघर्ष करने की भावना रही है। वे कमजोर टीम से नहीं हारते, अलबत्ता अनपेक्षित रूप से जबर हार जाते हैं। लेकिन तुरंत अपनी गलतियों में सुधार करते हुए टीम अपने फार्म में लौट आती है।

व्यंग्य

राजेन्द्र वामन काटदरे



पत्रकार - नेताजी आपको क्या लगता है कितनी सीटें मिलेंगी आपके दल को।
नेताजी - हमें पूर्ण बहुमत मिलेगा।
पत्रकार - लेकिन सुपर फास्ट चैनल के सर्वे में तो आपके दल को सिर्फ तीस-बत्तीस सीटें बताई जा रही हैं।
नेताजी - हमारा इस तरह के सर्वे - फर्वे पर विश्वास नहीं है। हमें यकीन है कि हमें पूर्ण बहुमत मिलेगा।
पत्रकार - यदि आपका दल जीत गया तो मुख्यमंत्री कौन बनेगा।
नेताजी - ये तो आलाकमान तय करेगी।
पत्रकार - आपके दल ने फ्री बिजली-पानी-राशन के साथ महिलाओं, छात्रों तथा बेरोजगारों

चुनाव के बाद पहला साक्षात्कार



को मासिक भत्ता देने का वायदा किया है लेकिन इसके लिये पैसा कहाँ से आयेगा।
नेताजी - वह मंत्रीमंडल की बैठक में तय होगा।
पत्रकार - लेकिन कुछ तो सोचा होगा ना आपने।
नेताजी - हमारे राज्य के पास बहुत संसाधन हैं, बहुत पैसा है।
पत्रकार - लेकिन पिछला बजट तो घाटे का था तथा राज्य पर कई सौ करोड़ का कर्ज भी है सो फ्री फंड का श्रीखंड बांटने का पैसा कहाँ से आयेगा। आप अपना वायदा कैसे पूरा करेंगे यह पहले सोचा नहीं गया क्या।
नेताजी - हम वायदा जरूर पूरा करेंगे, जरूरत पड़ी तो केन्द्र से पैसा माँगेगे।
पत्रकार - यदि केन्द्र से नहीं मिला तो....
नेताजी - पत्रकार जी, अब बस कीजिये हमें दल की मीटिंग में जाना है, देर हो रही है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

संपादक - उमेश त्रिवेदी

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)

RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subhassaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सम्बन्ध होना आवश्यक नहीं है।

बहुत अच्छा खेले लड़कों



खेल रंग

पंकज सुबीर

लेखक साहित्यकार हैं।

खेलों का आविष्कार मानव ने जीत या हार के लिए नहीं किया था, अपने मनोरंजन के लिए किया था। और यह बात एकदम सच है कि बीते 46 दिनों में सभी टीमों ने मिल कर दर्शकों का बहुत मनोरंजन किया। रोहित, गिल, विराट, श्रेयस और राहुल ने बल्ले से तो शामी, बुमराह, सिराज, कुलदीप और जडेजा ने गेंद से हम लोगों को रोमांचित बनाये रखा।

आप क्यों 19 नवंबर को ही स्मृतियों में बनाये रखना चाहते हैं? उससे पहले के मैचों को क्यों नहीं याद रखना चाहते? याद रखिए शामी, सिराज और बुमराह द्वारा बोल्ट होते, स्लिप पर कैच होते और पगबाधा होते बल्लेबाज, रोहित, विराट, गिल, राहुल और श्रेयस द्वारा लगाये गये लम्बे-लम्बे छक्के, शतक और अर्धशतक। लेकिन इसमें हमारी गुलती नहीं है, हमारी कंडिशनिंग की गुलती है।

हमारी फिल्मों में हमें दिखाया जाता है कि फिल्म के अंत में नायक विजयी रहता है और नायक के विजय भाव को अपने अंदर बसा कर हम सिनेमा हॉल से बाहर निकलते हैं। असल में फिल्म देखते समय हम नायक के साथ एकाकार हो जाते हैं, जब अंत में नायक जीतता है, तो हमें ऐसा लगता है कि नायक नहीं हम ही जीते हैं। यदि किसी फिल्म में नायक अंत में जीतता नहीं है, तो वह फिल्म फ्लॉप हो जाती है। भले ही फिल्म ने पूरे समय दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया हो। श्रीदेवी और कमल हासन की फिल्म 'सदमा' को याद कीजिए। फिल्म कमल की थी, मगर दर्शकों को यह पसंद नहीं आया कि अंत में कमल हासन को बिना पहचाने श्रीदेवी रेल में बैठ

कर चली जाती है, कमल हासन स्टेशन पर अपने आपको याद दिलाने के लिए बंदर की तरह नाचता रह जाता है। 19 नवंबर के अंत से पूरे विश्वकप के उल्लास को कम मत कीजिए, हमारी टीम ने हमारा भरपूर मनोरंजन किया है बाकी मैचों में, यह बात याद रखिए।

हर दिन हर किसी का नहीं होता, कल भारतीय टीम का दिन नहीं था। अब दिन होता तो ये 240 रन भी बहुत थे डिफेंड करने के लिए। तब, जब आपके पास सारे विश्वस्तरीय गेंदबाज हों। मुझे याद आ रहा है कि जब मैं इण्डियन में रहता था और अपनी क्रिकेट टीम 'प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र इण्डियन' का कप्तान भी था। तब हम 20-20 मैच ही खेलते थे। एक बार हम इण्डियन के पास गाँव ब्रजेश नगर में टूर्नामेंट का फाइनल खेल रहे थे और पहले बैटिंग करते हुए हम 18 रन पर आल आउट हो गये थे। गेंद जमीन पर पड़ने के बाद जमीन से चिपकती हुई आ रही थी। हमने सोचा कि अब तो क्या जीतेंगे, मगर हमारे स्पिन बॉलर मनीष ने मुझसे कहा- 'छूटू (मेरा घर का नाम, इण्डियन के दोस्त आज भी मुझे पंकज सुबीर नाम से नहीं जानते, सब छूटू नाम से ही जानते हैं) चिंता की बात नहीं है, उनकी गेंद सुरी (जमीन से चिपकती हुई) जा रही है, तो हमारी भी जायेंगी।' मनीष सुरी विशेषज्ञ था और दिन हमारा था और सामने खेल रही सीहोर की मजबूत टीम को हमारी छोटे कर्खे इण्डियन की टीम ने 9 रन पर आल आउट कर टूर्नामेंट जीत ली थी। कल भारत का दिन नहीं था, कल का दिन ऑस्ट्रेलिया का था। होता तो बुमराह, शामी, सिराज पहले पदार्थ ओवर में ही मैच को हमारे पक्ष में निर्णायक रूप से झुका देते। कोई भी हारने के लिए नहीं खेलता, सभी जीतने के लिए ही खेलते हैं, मगर खेल का नियम है कि जीतगा

कोई एक ही।

अति महत्वाकांक्षी माता-पिता के बच्चे जब प्रतियोगी परीक्षाओं में असफल होते हैं, तो वह असल में माता-



पिता की असफलता होती है। माता-पिता जब अपनी इच्छाओं का बोझ बच्चों के कंधों पर रख देते हैं तो बच्चों के कदम लड़खड़ा जाते हैं। कल की हार टीम की हार नहीं है, हम क्रिकेट प्रेमियों की हार है, जिन्होंने अपनी महत्वाकांक्षाओं का बोझ टीम पर रख दिया। हमें पागलों की तरह केवल और केवल जीती ही चाहिए थी। भारत

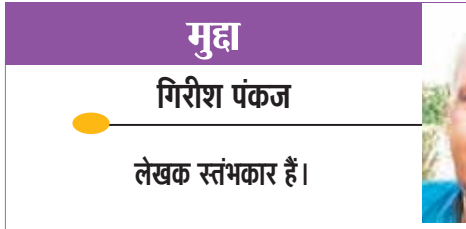
में मैच, सवा लाख से अधिक पगलाए हुए दर्शकों की स्टैंड्स में उपस्थिति, इतने कारण थे कि यह तो होना ही था। एक और घटना सुनाता हूँ, एक बार हमारी टीम

इण्डियन की प्रतिष्ठित 'मुरलीधर जोशी स्मृति प्रतियोगिता' के फाइनल में पहुँच गयी थी। मैच इण्डियन में ही था, पापा की पोस्टिंग वहाँ ब्लॉक मेडिकल ऑफिसर के रूप में थी। टीम में हम सब अस्पताल कैम्पस के ही बच्चे थे, जिनके पिता या माँ पापा के अधीनस्थ कार्यरत थे। पापा हैसला अफज़ाई के लिए मैच देखने पहुँच गये। हम दोनों

भाइयों के लिए पापा और बाकी बच्चों के लिए बड़े साहब दर्शकों में आ चुके थे। हम इतने नर्वस हुए कि जीतने की पूरी संभावनाओं के बाद भी हार गये। सवा सी करोड़ से ज्यादा लोगों की उम्मीदों का बोझ ग्यारह लड़कों पर था, यह तो होना ही था।

मैंने अभी तक जितने भी विश्वकप देखे हैं उनमें यह सबसे रोमांचक और सबसे दर्शनीय था। (जबकि मैं आईपीएल के कारण क्रिकेट देखना लगभग छोड़ चुका था।) इसकी बहुत सी बातें यादों में बनी रहेंगी और उनकी बातें हम करते रहेंगे। आइए इंतज़ार करते हैं 2027 के विश्व कप का। शायद उसमें विराट, रोहित, शामी और बुमराह नहीं हों, लेकिन उनकी जगह दूसरे होंगे। 'कल और आयेगी नार्मा' की खिलती कलियाँ चुनने वाले, मुझसे बेहतर कहने वाले तुमसे बेहतर सुनने वाले', खिलाड़ी असफल होने के बाद जब मैदान पर रोता है, तब वह असफलता पर नहीं रो रहा होता है, वह असल में हम दर्शकों की उम्मीदों पर खरा नहीं उतर पाने की निराशा के कारण रो रहा होता है। हमें ही बड़ कर कहना होगा 'कोई बात नहीं बच्चों, कप हाथ में नहीं आया कोई बात नहीं, पर हमारे लिए तुम ही विजेता हो।' आइए अपने खिलाड़ियों द्वारा किये गये उत्कृष्ट प्रदर्शन का उल्लास मनाते हैं। इनमें से बहुत से खिलाड़ियों का यह अंतिम विश्वकप है, आइए उनको कहते हैं कि खेल का अर्थ आनंद होता है और इस विश्वकप में आपके कारण हमने भरपूर आनंद लिया। 2027 में जब हम विश्वकप देख रहे होंगे तब आपको बहुत मिस करेंगे। बहुत अच्छे खेले लड़कों, बहुत अच्छे खेले। हमें तुमसे कोई शिकायत नहीं है। कुछ दिन आराम करो, फिर मिलते हैं।

बहुत हुआ क्रिकेट, अब फुटबॉल-हॉकी को प्रोत्साहित करें!



मुद्दा

गिरीश पंकज

लेखक स्तंभकार हैं।

क्रिकेट हमारे देश में खुमार की तरह चलता है। क्रिकेट के प्रति प्रेम के चलते अभी हमने देखा कि एक दिवसीय विश्व कप मैच को देखने के लिए लोगों ने हजारों रुपये खर्च करके अहमदाबाद की यात्रा की। एक सज्जन बता रहे थे कि जब उन्होंने अपने भतीजे से पूछा कि अहमदाबाद तो जा रहे हो लेकिन वहाँ सारे होटल बुक हैं। रहने की कोई जगह नहीं मिलेगी, तो लड़के ने कहा, 'मुझे उसकी चिंता नहीं। मैं बीमारी का बहाना करके किसी अस्पताल में जाकर भर्ती हो जाऊँगा।' तो यह जुनून है लोगों के मन में! दुर्भाग्य की बात है कि ऐसा जुनून सभी फुटबॉल जैसे गतिशील खेल के लिए नहीं होता। आज भारत का नाम फुटबॉल के मामले में दुनिया में कहीं भी नहीं है। हमारी सरकारों ने सभी फुटबॉल को महत्व दिया ही नहीं। हर कोई क्रिकेट का दीवाना है यही कारण है कि जब ऑस्ट्रेलिया के साथ एक दिवसीय क्रिकेट के अंतिम मुकाबले में भारत पराजित हो गया तो ऐसा महसूस हुआ जैसे पता नहीं हमने क्या खो दिया है। कल तक जिन खिलाड़ियों को हम सम्मान दे रहे थे, उन खिलाड़ियों को गरियाने लगे। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में फाइनल खेला जा रहा था, उसे देखने के लिए देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी मौजूद थे तो उसको लेकर तरह-तरह की नकारात्मक बातें लोग करने लगे। गोया मोदी जी की उपस्थिति के कारण हार गए। खेल तो खेल होता है। दो टीम मैदान में उतरेगी, तो स्वाभाविक है कि कोई एक जीतेगी। और जो टीम जीतती है, निःसंदेह उसका खेल पराजित टीम से तो बेहतर होता ही है। 19 नवंबर के मैच को मैंने भी ध्यान से देखा। जब भारतीय टीम बैटिंग कर रही थी, तभी मुझे लगा था भारतीय टीम शायद हार जाएगी। टीम के कप्तान रोहित शर्मा जिस लापरवाह तरीके से खेल रहे थे, उसे देखकर मैंने अपने बेटे से कहा ही था कि देखना, थोड़ी देर बाद यह कैच आउट हो जाएगा। और कुछ देर बाद ही वह कैच आउट ही हुआ। इसके पहले रोहित तीन चार-बार उनके कैच आउट होते-होते बचा था। हमारी भारतीय टीम के बारे में हम सब ने महसूस किया है कि वह शुरुआती मैच तो जबरदस्त खेलती

है, जीतती भी है, लेकिन फाइनल मैच में वह कुछ अतिरिक्त तनाव पाल लेती है। दबाव में आ जाती है। इसलिए जैसा खेल उसे खेलना चाहिए, वैसा खेल नहीं पाती अहमदाबाद के मैच में भी ऐसा ही हुआ। जितने रन बनने चाहिए उससे काफी काम बने। प्रायः शतक जमाने वाले विराट कोहली भी कमाल नहीं दिखा सके। रोहित शर्मा भी। शुभमन गिल तो चार रन बना के पेवेलियन लौट गए। अगर भारतीय टीम 300 से ज्यादा रन बना लेती तो बहुत संभव है ऑस्ट्रेलिया की टीम को पराजित किया जा सकता था। हमारे बॉलरों ने शुरुआत में तो काफी अच्छा खेला। 47 रन तक ऑस्ट्रेलिया के तीन खिलाड़ियों को उन्होंने आउट कर दिया। लेकिन लेकिन बाद में वे विफल रहे। ट्रेविस हेड को अंततः आउट नहीं कर पाए, जो मैं ऑफ द मैच बने। जिन्होंने शानदार बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए 137 रन बनाए। अगर हमारे गेंदबाज ट्रेविस हेड को आउट कर देते तो बहुत संभव है, जीत का सेहरा भारतीय टीम के सर पर बंध जाता, लेकिन ऐसा हुआ नहीं। खेर, खेल तो खेल होता है। ऑस्ट्रेलिया की टीम के दमदार खेल ने भारत को 6 विकेट से हरा दिया। छठी बार वह विश्व विजेता बनी। भारत केवल दो बार विश्व चैंपियन बन सका। 1983 में और 1911 में। बहरहाल, आने वाले समय में हम सब उम्मीद करते हैं कि हमारी टीम बेहतर प्रदर्शन करके विश्व विजेता बनेगी। यहाँ मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि जिस तरह से हम क्रिकेट के मोह में फंसे हुए हैं, और धीरे-धीरे इसे सटीरियों का भी खेल बना दिया गया, तब यह जरूरी है कि हम लोग फुटबॉल और हॉकी को भी खूब प्रोत्साहित करें। क्रिकेट खिलाड़ियों पर तो बेहिसाब दौलत बरसती है, लेकिन फुटबॉल और हॉकी खिलाड़ियों को बिल्कुल महत्व नहीं दिया जाता। अगर हम फुटबॉल खिलाड़ियों को भी महत्व दें, तो उम्मीद करता हूँ कि आने वाले समय में हम भी विश्वस्तर के फुटबॉल खिलाड़ी दे सकते हैं। भारत देश के लोग फुटबॉल प्रेमी तो हैं लेकिन सरकारी स्तर पर इसे बहुत कम प्रोत्साहित किया जाता है। इस दिशा में विचार करने की जरूरत है।



दृष्टिकोण

डॉ. पूषा चौधरी

असिस्टेंट प्रोफेसर, जन्तु-विज्ञान

भारतीय दर्शन चेतनावाद से निर्मित है। सदियों से भारतीय दार्शनिकों ने चिंतन, चेतन और तर्कवाद से विभिन्न सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। जो मानव कल्याण हेतु लाभकारी सिद्ध हुए हैं। कलांतर में मनुष्य अपने पूर्वजों के सिद्धांत और विचारों को वास्तविकता में बदलने हेतु प्रयोगात्मक अध्ययन विकसित किया। प्रयोगात्मक अध्ययन का संबंध प्रकृति और भौतिकता से है। प्रयोगात्मक कहने का तत्पर विज्ञान और आध्यात्मिकता से भी है। अक्सर विज्ञान और आध्यात्म को परस्पर एक दूसरे के विरोधी और भिन्न देखा जाता है। स्थूल दृष्टि से देखने पर आध्यात्म और विज्ञान सर्वथा भिन्न ही प्रतीत होते हैं। परंतु वस्तुतः ऐसा नहीं है। विज्ञान और आध्यात्म परस्पर एक दूसरे के पूरक हैं। आध्यात्म और विज्ञान की दिशाएँ, धाराएँ विपरित प्रतीत होती हैं किंतु ऐसा है नहीं। आध्यात्म दीपक है तो विज्ञान उसका प्रज्वलित प्रकाश। वेबर कहते हैं कि 'दर्शन के बिना विज्ञान वैसा है जैसे एकता या संगठन के बिना कोई समूह आत्मा के बिना शरीर, इसी प्रकार विज्ञान के बिना दर्शन ऐसा है, जैसे शरीर के बिना आत्मा' विज्ञान और आध्यात्म का उद्देश्य मनुष्य जीवन को सुख, शांति और समृद्ध बनाना है। आध्यात्म मनुष्य को आंतरिक दृष्टि से समृद्ध संपन्न, आत्मप्रसन्नता का उदय और आत्मबल को मजबूती प्रदान करता है। विज्ञान बाह्य दृष्टि से मनुष्य को संसाधनों से युक्त जीवन को सरल बनाता है। मनुष्य में आंतरिक चेतना को प्रस्फुटित करने वाली शक्ति का नाम अध्यात्म है। वस्तुतः आध्यात्म का लक्ष्य मनुष्य के आंतरिक शक्तियों और सत्यवृत्तियों को जागृत करके मनुष्य के जीवन में देवत्व के गुणों का अनुभव और

विज्ञान और आध्यात्म एक-दूसरे के पूरक

आत्म साक्षात्कार करना है। विज्ञान सूक्ष्म कण, पदार्थों और प्रकृति में छिपी शक्तियों का अन्वेषण और नूतन अध्ययनों से भौतिक कणों से मुक्ति दिलाकर जीवन को सरल बनाना है। विज्ञान और आध्यात्म सत्य की खोज में निरत हैं। दोनों ही अपने पिछली मान्यताओं के गलत सिद्ध होने पर उसे अस्वीकार करते हैं। आध्यात्म और विज्ञान के सिद्धांतों में परस्पर समानता देखने को मिलती है। दोनों का लक्ष्य अपने गंतव्य मार्ग को प्राप्त करके मनुष्य जीवन के उद्देश्यों की पूर्ति करना है। विज्ञान हमें आध्यात्म से जोड़ता है और आध्यात्म हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने में सहायता प्रदान करता है। विज्ञान कहता है ब्रह्माण्ड में उपस्थित सूक्ष्म कण पदार्थ कभी नष्ट नहीं होते हैं, बल्कि मूल स्वरूप में परिवर्तन हो जाता है। आध्यात्म में जीव की आत्मा कभी मृत नहीं होती है। वह एक शरीर से निकल कर दूसरे शरीर में प्रवेश करती है। मानव शरीर की समस्त बाह्य क्रियाविधि का विश्लेषणात्मक अन्वेषण विज्ञान करता। मनुष्य के आंतरिक चेतनाओं को जागृत करने का कार्य अध्यात्म का करता है। आध्यात्म के सिद्धांतों और विचारों को आगे बढ़ाने का कार्य विज्ञान करता है। महान वैज्ञानिक डॉ. अब्दुल कलाम कहते हैं कि सृष्टि आध्यात्मिक सिद्धांतों का उसी प्रकार पालन करती है, जिस प्रकार भौतिक शास्त्र, और गुरुत्व के नियमों का इन सिद्धांतों को समझना, जानना और फिर उनके अनुसार जीवन मार्ग का चुनाव करना हमारा कर्तव्य है। आध्यात्म वसुधैव कुटुंबकम् के नियमों का पालन करता है। आध्यात्म की



दृष्टि में सम्पूर्ण जगत एक परिवार है। सभी बाह्य कणों से मुक्ति और सुखों की प्राप्ति हेतु आध्यात्म मानव चेतना को जागृत करता है। मानवतावादी संदेश को मनुष्य आध्यात्म के माध्यम से विश्वव्यापी बनाने का कार्य करता है। आध्यात्मिक संदेश प्रसारित करने हेतु दर्शन का प्रतिपादन किया गया है, जो मानवता के कल्याण और विकास हेतु विचार विमर्श का साधन उपलब्ध कराते हैं। भारतीय दर्शन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण और नवीन अन्वेषण के उपाय बताए गए हैं। महर्षि सुश्रुत के द्वारा खोजी गई शल्य चिकित्सा जो भारतीय आध्यात्म दर्शन की सबसे बड़ी उपलब्धियाँ हैं। भारतीय दर्शन ने

भौतिक विज्ञान को प्रतिपादित किया है। महर्षि कणाद द्वारा सबसे पहले प्रमाण्य तत्व के सूक्ष्म कण की व्याख्या प्रस्तुत किया गया था। जिससे भौतिक विज्ञान में एक क्रांति की लहर दौड़ पड़ी। बहुते विज्ञान की अवधारणा जो मूलतः आध्यात्म की देन है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि 'आध्यात्म और विज्ञान दोनों दर्शन से निकलते हैं। विज्ञान की उपयोगिता पृथ्वी पर जीवन की बेहदरी के लिए प्रकृति की शक्तियों का उपयोग करने और ज्ञान के रास्ते ब्रह्मांड की वास्तविकता से परिचित होने में है।' स्वामी विवेकानंद विज्ञान को आध्यात्म का दूत कल है। प्राचीन कला से भारतीय ज्ञान की संस्कृति

का उच्च शिखर पर होना इस बात का संकेत है की आध्यात्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक हैं। आध्यात्म की आधारशिला और विज्ञान के अन्वेषण से आज भारत चाँद पर कदम रख दिया है। सापेक्षता के सिद्धांत को प्रतिपादित करने वाले वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने भी विज्ञान को आध्यात्म का रूप माना है। आइंस्टीन लिखते हैं कि 'धर्म, कला विज्ञान वास्तव में एक ही वृक्ष की शाखा प्रशाखाएँ हैं।' विज्ञान और आध्यात्म का जन्म एक साथ हुआ है। इनका उद्देश्य भी एक है। विज्ञान बाह्य सच को खोजने का साधन है। आध्यात्म आंतरिक चेतना को जगाने का कार्य है। वैश्विक महामारी के समय में आध्यात्म और विज्ञान का सामंजस्य देखने को मिलता है एक तरफ विज्ञान अदृश्यशक्ति संक्रमण को नष्ट करने पर अन्वेषण कर रहा था तो वहीं दूसरी ओर आध्यात्म अंतरात्मा और मानवता को संक्रमण से लड़ने के लिए आत्मबल और साहस प्रदान कर रहा था। अंतः संक्रमण से भयभीत हुई दुनिया को मुक्ति मिली। विज्ञान मानवतावाद को बढ़ावा देता है। विज्ञान जाति, धर्म, भाषा, संस्कृति के नाम पर बाँटता नहीं है। आध्यात्म मानवता को एक सूत्र में पिरो कर एक साथ चलने का माध्यम प्रदान करता है। असल में दोनों का कार्य, उद्देश्य एक है। आज भारत की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, साहित्य जो देश दुनिया में अपनी कृतिमान स्थापित कर रही है वह विज्ञान का ही देन है। आज भारत विश्व गुरु बन गया है। यह भारतीय आध्यात्म की देन है। आज बहिर्जगत में विज्ञान ने दुनिया को एक सूत्र में आबद्ध करने का आधार प्रस्तुत किया है तो अंतर्जगत में वहीं प्रयोजन आध्यात्म पूरा कर रहा है। आध्यात्म यदि शरीर है तो विज्ञान उसमें प्रवाहित होता रक्त है। दोनों इतने अभिन्न हैं की इन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता है।

ऐसे आयोजन से समाज को नई दिशा मिलती है -महामंडलेश्वर शैलेषानंद गिरि महाराज

श्रीगोड मालवीय ब्राम्हण समाज, धार निःशुल्क परिचय सम्मेलन समिति द्वारा अन्नकूट महोत्सव कार्यक्रम



धारा श्रीगोड मालवीय ब्राम्हण समाज, धार निःशुल्क परिचय सम्मेलन समिति द्वारा अन्नकूट महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि श्रीगोड समाज के पंच दशनाम जून अखाड़े के महामंडलेश्वर शैलेषानंद गिरि महाराज थे। उन्होंने आयोजन की सराहना की। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजनों से समाज को नई दिशा मिलती है। ये अनुभूत आयोजन है। अध्यक्षता सुधीर त्रिवेदी ने की। महिला अध्यक्ष किरण जोशी, युवा कार्यकारिणी अध्यक्ष निलेश पाठक, उपाध्यक्ष उज्ज्वल दुबे, अनिल जोशी, कैलाश मंडलोई, कोषाध्यक्ष विजय कानूनगो, महिला उपाध्यक्ष सोनल दुबे एवं वर्षा व्यास मौजूद रही। मंच पर अतिथि के रूप में शरद जोशी, संरक्षक गजानंद जोशी, सुभाष पाठक, प्रदीप जोशी, महिला संरक्षक कामिनी दुबे, कल्पना जोशी उपस्थित रही। संचालन उज्ज्वल दुबे ने किया। सुधीर त्रिवेदी ने बताया कि पूर्व में समिति द्वारा निःशुल्क परिचय सम्मेलन कराया था। आगामी दिनों में फिर से निःशुल्क परिचय सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा।

नृत्य के साथ लगाया ठाकुरजी को भोग- मधुरा से आई टीम ने आकर्षक नृत्य के ठाकुरजी को 56 भोग लगाए। टीम में राधा, कृष्ण और ग्वालों ने भजनों पर सुंदर नृत्य की प्रस्तुति दी। प्रथम कड़ी में सरस्वती वंदना बाद कोरोना में दिवंगत समाजजनों को श्रद्धांजलि दी। 80 पर कर चुके समाज के वरिष्ठों का सम्मान भी किया। सभी ने अन्नकूट में प्रसादी ग्रहण की।

अंडर -22 जिला क्रिकेट टीम चयन हेतु चयन ट्रायल 22 को

धारा जिला क्रिकेट एसोसिएशन के तत्वावधान में जिले की अंडर -22 क्रिकेट टीम का चयन ट्रायल स्थानीय उदय रंजन क्लब मैदान पर दिनांक 22 नवंबर, बुधवार को दोपहर 3 बजे किया जाएगा जिले की समस्त तहसीलों के खिलाड़ी चयन ट्रायल में भाग ले सकते हैं कट ऑफ डेट 01/09/ 2001 होगी खिलाड़ियों को पंजीयन कराना आवश्यक होगा एवं स्वयं की कौट साध में लाना होगी पिछले 3 वर्षों की ओरिजिनल अंकसूची, आधार कार्ड एवं डिजिटल जन्म प्रमाण पत्र अनिवार्य होगा। 24 नवंबर को अंडर-22 का लेदर बॉल टूर्नामेंट खंडवा में प्रारंभ हो रहा है। जानकारी एसोसिएशन के सचिव राजेंद्र सिंह चौहान ने दी।

पार्थ शर्मा एवं अविका वर्मा 35वीं सब जूनियर नेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप बालनगीर (उड़ीसा) में म.प्र. दल का नेतृत्व करेंगे

धारा बालनगीर (उड़ीसा) में 21 से 24 नवंबर तक खेले जाने वाली '35वीं सब जूनियर नेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप' में भाग लेने हेतु धार के उभरते हुए प्रतिभावन शटलर्स अविका वर्मा एवं पार्थ शर्मा अपने पालकगण के साथ बालनगीर के लिए प्रस्थान किया।



जानकारी देते हुए शरदचंद्र निगम संस्था अध्यक्ष ने बताया कि इस वर्ष 'म.प्र. राज्य स्तरीय सब जूनियर बैडमिंटन स्पर्धाओं' में लगातार श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले शटलर्स अविका वर्मा एवं पार्थ शर्मा अंडर 13 बालक-बालिका एकल एवं युगल वर्ग में '35 वीं सब जूनियर नेशनल बैडमिंटन चैंपियनशिप बालनगीर' में पहली बार म.प्र. दल का नेतृत्व करेंगे। स्पर्धा के एकल एवं युगल वर्ग के मुकामले 21.11.23 से खेले जाएंगे। इस अवसर पर उनके प्रशिक्षक सुधीर वर्मा ने शटलरो की राष्ट्रीय उपलब्धि पर दोनों शटलरो को बधाई देते हुए स्पर्धा में श्रेष्ठ प्रदर्शन कर पदक जीतने हेतु अग्रिम हार्दिक शुभकामना प्रेषित की।

भोजपुरी समाज के लोगों को दी छठ की शुभकामनाएं सांसद डीडी उडके एवं विधायक डॉ. पंडागरे ने डूबते और उगते हुए सूर्य को दिया अर्घ्य

भोजपुरी एकता मंच द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए आयोजित



बेतूल/सारनी। आस्था एव विश्वास के दो दिवसीय महापर्व छठ पूजा का शुभारंभ सूर्य भगवान के प्रतिमा के सामने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ बेतूल सांसद डीडी उडके, विधायक डॉ. योगेश पंडगे, भाजपा जिला अध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला, भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा प्रदेश मिडिया प्रभारी अविजर हुसैन, नया अध्यक्ष किशोर बरदे, सारनी एसडीओपी रोशन कुमार जैन, पी जे शर्मा, जगदीश पवार, महेंद्र सिंह ठाकुर, जैम प्रकाश सिंह, पूर्व नेता प्रति पक्ष महेंद्र भारती, भीमबहादुर थापा, श्रमिक नेता ऐ एन सिंह, भरत सिंह, सुनील सरियाम सुधा चन्द्रा, कालीमाई व्यापारी संघ अध्यक्ष रमेश हरोडे, भोजपुरी एकता मंच जिला अध्यक्ष रंजीत सिंह, कमलेश सिंह, भोला कान्ती, अरुण सिंह सुरजदेव सिंह ओम प्रकाश सिंह, नागदेव निगम किशोर चौहान विकी सिंह की उपस्थिति में किया गया।

जिसमें सतना की गायिका ममता सत्यापित, सविता मिश्रा गायक जबलपुर, असित विश्वास, सुनील ने सिंह द्वारा भोजपुरी गीत का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। इसके अलावा कार्यक्रम में झांकियां जबलपुर के कलाकार मनोष कोरी द्वारा अभिनय किया। इसे देखकर लोग काफी मनमोहित हुए एवं लोगों ने अभिनय की जा रही झांकी की प्रशंसा की।

इस अवसर पर सांसद डीडी उडके ने कहा कि हम सब सौभाग्यशाली है सतपुड़ा सुस्मय वादियों में बसी विद्युत नगरी एवं सतपुड़ा का जलाशय का पावन यह छठ मैया का तट और प्रातः कालीन सूर्यदेव की किरणें जिससे हमारा रूप तेज और चर्चस्व बढ़ने की नियमितता और जो हमारा यह लोकपर्व है जिसमें हम सब सम्मिलित हैं। भगवान के प्रति आभार व्यक्त करते हैं। हम सभी इसके साक्षी बने रहे हैं यह लोक उत्सव हमारी संस्कृति एवं लोक गीतों का संरक्षण है। सभी भोजपुरी समाज के लोगों को छठ पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ और भोजपुरी एकता मंच के सभी सदस्यों को शुभकामनाएं देता हूँ और सफल आयोजन सराहना करता हूँ। जलप्रहरी मोहन नागर ने

कहा कि भोजपुरी एकता मंच एवं भोजपुरी समाज के लोगों को छठ पावन पर्व की बधाई देता हूँ इतना प्रसन्नता का यह लौहार है कि आज हमारी प्रसन्नता दुगुनी चौगुनी है। प्रतिवर्ष हम यहां छठ पर्व का उत्सव मनाने आते थे लेकिन जब जल की ओर देखते थे तो लगता था कि गोलब का मैदान है। इतना बड़ा जलाशय से एक खरपतवार की आगोश में आ गया था। सारे प्रयास शासन प्रशासन और विद्युत मंडल और सबने मिलकर खरपतवार को जलाशय से बाहर निकाला फिर हमारे सांसद ने लोकसभा में जाकर खरपतवार के मामले को उठाया। यहां के विधायक डॉ. योगेश पंडगे ने विधानसभा में मामला उठाया। प्रदेश मुख्यमंत्री के निर्देश पर टीम का गठन हुआ। तत्कालीन जो मुख्य अभियंता रमेश गुप्ता के प्रयासों से वैज्ञानिकों का दल आया और चाइनीस झालर को खाने वाले कीड़े लाकर डेम में छोड़े गए तब जाकर कहीं इस जलाशय में आज हम छठ मैया के महापर्व की पूजा कर पा रहे हैं।

इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष आदित्य बबला शुक्ला डॉ. योगेश पण्डग नया अध्यक्ष किशोर बरदे नया उपाध्यक्ष ने भोजपुरी समाज के लोगों को छठ पूजा की बधाई दी एवं आयोजन समिति को सफल आयोजन के लिए प्रशंसा की। वहीं भोजपुरी एकता मंच के जिला अध्यक्ष रंजीत सिंह, कमलेश सिंह, प्रमोद सिंह, लक्ष्मण साहू, विकी सिंह, छविनाथ भारद्वाज ने बताया कि आस्था के इस महापर्व को बिहार तथा यूपी के लोगों के द्वारा काफी होंल्लास के मनाया गया है। सारनी क्षेत्र में लगभग सैकड़ों परिवारों के माध्यम से छठ लौहार मनाया जाता है। कहा जाता है कि यह पर्व बहुत कठिन होता है जिसमें निर्जल रहकर व्रती उपवास रखते हैं, 4 दिन के इस पर्व को काफी कड़े नियमों से करना पड़ता है। आस्था के महापर्व छठ पर्व का आयोजन सारनी क्षेत्र के सतपुड़ा

डैम, पाथाखेड़ा के शिव मंदिर, नादिया घाट, तेलिया डैम सहित कई स्थानों पर किया जाता। जिसमें छठ पर्व का उपवास रहने वाले व्रतियों ने भगवान सूर्य की आराधना में पानी में खड़े होकर कड़ी तपस्या की जिसके बाद भगवान सूर्य को अर्घ्य दिया। आस्था के महापर्व छठ पर्व के उपवास करने वाले व्रती ने 36 घंटे का कड़ा उपवास उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देने के बाद खतम होता है। जिला प्रशासन एवं स्थानीय प्रशासन के अधिकारी, नया प्रशासन, मुख्य विभाग का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। जबकि कार्यक्रम उसको सफल बनाने के लिए नगर पालिका से अध्यक्ष किशोर बरदे, पुलिस प्रशासन थाना प्रभारी अरविंद कुमार, गोताखोर की टीम से दिलीप झोड़, स्वास्थ्य विभाग, सफाई विभाग, साउंड सिस्टम जुल्फिकार डी जे साउंड, टेकुआ प्रसाद बनाने के लिए लक्ष्मण साहू, धर्मेंद्र राय, शिव गुप्ता चाय व्यवस्था के लिये गोलू राजपूत को सम्मानित किया गया। यह कार्यक्रम का आयोजन पिछले बारह वर्षों से भोजपुरी एकता मंच द्वारा भव्य रूप में आयोजित किया जा रहा है। जिसमें नगर पालिका सारनी, पुलिस प्रशासन, एमपीईबी सारनी, डब्ल्यूसीएल पाथाखेड़ा, मत्स्य विभाग, राजस्व विभाग के सहयोग एवं खासतौर पर मीडिया की शानदार कवरेज के कारण सारनी सतपुड़ा डैम की छठ पूजा का आयोजन पूरे जिले ही नहीं अपितु पूरे प्रदेश में सारनी अपनी एक अलग ही पहचान बना चुका है।

सुरक्षा की रही पूर्ण व्यवस्था - पुलिस जवानों को सतपुड़ा डैम में स्थित छठ घाट पर तैनात थे। वहीं पुलिस के जवानों ने भी दोनो दिन सुरक्षा की दृष्टि से जगह जगह तैनात कर किसी भी अप्रिय घटना को घटित नहीं होने दिया। वहीं यातायात व्यवस्था ना बिगड़े और श्रद्धालुओं को किस तरह के परेशानी ना हो जिसको लेकर चिंतित पार्किंग पर दो और चार पहिया वाहनों को पार्किंग कराया गया। सारनी अनुविभागीय पुलिस अधिकारी रोशन कुमार जैन, थाना प्रभारी अरविंद कुमार तथा पूरी पुलिस टीम ने अपना कार्य पूरी लगन के साथ किया था। और

कार्यक्रम को सफल बनाने में अहम योगदान दिया।

छठ घाट पर स्वच्छता का रखा गया ध्यान - सतपुड़ा छठ घाट पर सफाई विभाग द्वारा स्वच्छता को ध्यान में रखते हुए दो पालियां में कर्मचारी ड्यूटी तैनात की गई थी ताकि समय-समय पर सफाई की जा सके। किसी तरह की कोई गंदगी ना उत्पन्न हो। और श्रद्धालु किसी तरह की कोई परेशानी ना हो। जिसकी जिम्मेदारी खुद स्वास्थ्य निरीक्षक कमल किशोर भावसार ने संभाली थी।

गोताखोरों की भी रही तैनाती- कड़कड़ाती उंड में शाम और सुबह दोनों टाइम नगर पालिका प्रशासन द्वारा गोताखोरों की व्यवस्था की गई थी। जो अपने चिन्हित स्थानों पर सक्रिय रहे। जिसके कारण पानी में ऐसी कोई भी अप्रिय घटना घटित नहीं हुई। रंगारंग कार्यक्रम एवं ग्राउंड की सजावट ने मोहा सबका मन- सतपुड़ा डैम में स्थित आस्था के महापर्व छठ पर्व के अवसर आयोजित भोजपुरी संस्कृतिक कार्यक्रम देखने आए श्रद्धालु के लिये यादगार पल था। वहीं दूसरी ओर झांकियों के माध्यम से भी श्रद्धालु का मन मोहा नगर पालिका प्रशासन की ओर से पूरे ग्राउंड को इतना सुंदर शर्मा टेंट हाउस एवं यश टेंट हाउस ने सजाया था। श्रद्धालुओं के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहा। यह भव्य आयोजन प्रतिवर्ष भोजपुरी एकता मंच द्वारा आयोजित किया जाता है।

इस अवसर पर भोजपुरी एकता मंच के जिला अध्यक्ष रंजीत सिंह, कमलेश सिंह, प्रमोद सिंह, लक्ष्मण साहू, अरुण सिंह, विकी सिंह, नरेंद्र सिंह, छविनाथ भारद्वाज, बाबू झा, आई पी सिंह, शिवू सिंह, धमेन्द्र राय, मिन्टू राय, सुभाष चौरसिया, बाबू सिंह विक्रम सिंह भीम बहादुर थापा गणेश महस्की मो ताहिर बबलू बामनकर देवेन्द्र सोनी गोलू राजपूत सुधीर यादव, नारायण खातरकर, प्रवीण सोनी सरोज विश्वकर्मा, जॉन पाण्डे, अंकित सिंह, शैलेश ठाकुर, दिलीप झोड़, शिवबली सिंह, मोती राम बंजारे, मुकेश यादव, पप्पू सिंह, आर एन सिंह सहित भारी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

मुलताई स्टेशन से गुजर रही मालगाड़ी की चपेट में आने से एककर व्यक्ति की हुई मौत, नहीं हो पाई शिनाख्त



बेतूल/मुलताई। मुलताई नगर के रेलवे स्टेशन पर सोमवार दोपहर करीब 12 बजे प्लेटफार्म नम्बर 1 पर से मालगाड़ी गुजर रही थी, तभी उसकी चपेट में एक व्यक्ति आ गया। व्यक्ति के ट्रेन की चपेट में आने से वह बुरी तरह से घायल हो गया। इसका एक हाथ और दोनो पैर कट गए थे।

थी, जिसके कारण प्लेटफार्म नंबर एक से मालगाड़ी गुजर रही थी। तभी अचानक से उस गाड़ी की चपेट में एक व्यक्ति आ गया और उसकी मौत हो गई। हालांकि खबर लिखे जाने तक उस व्यक्ति की शिनाख्त नहीं हो पाई थी। उसके पास से कोई भी दस्तावेज नहीं मिल पाए, मात्र एक मोबाइल फोन प्राप्त हुआ है जिससे जानकारी जुटाई जा रही थी। उसके शव को सरकारी अस्पताल के पोस्टमॉर्टम नंबर में रखवा दिया गया था। इस बात की जानकारी भी नहीं लग पाई कि वह व्यक्ति स्वयं से ट्रेन के बीच में कूदा या, गलती से गिर गया। यह दुर्घटना है या आत्महत्या इस बारे में पड़ताल की जा रही है। कुछ लोगों ने बताया की उसके साथ एक और व्यक्ति था और वे दोनो प्लेटफार्म नंबर एक पर काफी देर से मूम रहे थे।

स्कूली बच्चों को ले जा रहा आटो पलटा, दो बच्चे घायल

परमंडल के पास राजस्थान एगो के सामने हुआ हादसा

बेतूल/मुलताई। मुलताई नगर के समीप ग्राम परमंडल पर सोमवार दोपहर करीब ढाई बजे कोरोला स्कूल के बच्चों को लेकर हेटी खापा जा रहा आटो अचानक से अनियंत्रित होकर पलट गया। आटो में 6 स्कूली बच्चे और आटो चालक परमंडल निवासी कृष्णा डडोरे सवार था। जिसमें से दो बच्चे घायल बताए जा रहा है, प्रत्यक्षदर्शियों द्वारा बताया गया कि मुलताई से हेटी खापा जा रहे आटो के सामने अचानक से कुत्ते आ गए, जिसके चलते आटो अनियंत्रित हो गया और वह राजस्थान एगो के सामने पलट गया। जिसके चलते आटो का सामने का कांच और ड्राइवर के पास का गेट टूट गया। आटो में सवार दो स्कूली बच्चे शानवी पवार और हिमांशी धुवें को इस दुर्घटना में चोट आई है। वहीं आटो में दिव्यांशी पवार, शिवाय



पवार, अय्यांशा पवार और अय्यांश पवार भी सवार थे। आटो पलटने की सूचना मिलते ही मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई और मुलताई पुलिस थाने से पुलिस बल भी मौके पर पहुंच गया। मौके पर से गुजर रहे निजी वाहन चालकों द्वारा बच्चों को तत्काल सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया। जहां पर डॉक्टर द्वारा दोनो घायल बच्चों का उपचार किया गया। आटो पलटने में की सूचना लगते ही कोरोला स्कूल के संचालक सुरेंद्र सिंह गठौड़ भी तत्काल अस्पताल पहुंचे और सभी बच्चों की स्थिति देखी और उन्हें तत्काल उपचार उपलब्ध कराया।

गुरु महाराज भक्ति विकास स्वामी का नगर आगमन वैष्णव भक्तों की जड़ें और मजबूत कर गया..

नर्मदापुरम। अंतरराष्ट्रीय कृष्ण भवानामृत संघ प्रमुख श्री भक्ति विकास स्वामी का दो दिवसीय घोषित कार्यक्रम आज सम्पन्न हो गया। एलआईसी दफ्तर के उपर द्वितीय तल स्थित इस्कॉन मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित हुए गुरु महाराज भक्ति विकास स्वामी भक्तों को आशीर्वाद देते हुए कृष्ण भावना भवित मिशन के प्रचार-प्रसार के लिए आज आगे गन्तव्य के लिए प्रस्थान कर गए, दक्षिण एक्सप्रेस से रवाना हुए गुरु महाराज को विदा करने रेलवे स्टेशन पर भक्तों की खासी भीड़ रही जिन्होंने श्री हरि नाम संकीर्तन करते हुए गुरु महाराज को विदा किया, गुरु महाराज नगर में दो दिवसीय घोषित कार्यक्रम में भाग लेने आए थे, एक दिन पहले मालाखेड़ी स्थित स्वयंवरम गार्डन में मंदिर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में गुरु महाराज शामिल हुए यहां कार्तिक मास में होने वाली भगवान दामोदर की प्रसन्नता के लिए किए जाते दीप-दान में भाग लिया इस दौरान दीप-दान से पूर्व दामोदर अष्टक का गायन हुआ, गुरु महाराज ने यहां कृष्ण भावना भवित मिशन को आगे और प्रचार प्रसार मिले, लोगों में



आध्यात्मिक रुचि बढ़े को दृष्टिगत रखते हुए प्रवचन दिए। वर्ल्ड कप फाइनल मैच होने के बाद भी गुरु महाराज को सुनने और उनके दर्शन करने के लिए उमड़ी भीड़ इसमें गवाह बनी कि, इस्कॉन मंदिर परिवार द्वारा चलाए जा रहे कृष्ण भावना भवित मिशन को लेकर लोगों के मन में आध्यात्म को जानने समझने की ललक तो है.. लेकिन भौतिक विषयों और रोजमर्रा के कार्यों में फंसकर वे इस

मार्ग को अपना पाने से वंचित हैं। गुरु महाराज उनके प्रवचन में उपस्थित जनसमूह को देख काफी प्रभावित हुए। इस दौरान भक्तों ने आध्यात्मिक ज्ञान के लिए सबसे ज्यादा जरूरी गुरु महाराज और अंतरराष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत संघ (इस्कॉन) के संस्थापक पृथ्व गुरुदेव प्रभुपाद द्वारा लिखित ग्रंथों को हाथों हाथ लिया जो नगरवासियों में कृष्ण भावना भवित मिशन को लेकर



बड़े रहे रझान का परिचायक दिखाई दिया। गुरु महाराज आज सुबह एलआईसी दफ्तर के उपर द्वितीय तल स्थित इस्कॉन मंदिर की इकाई में सुबह पांच बजे मंगल आरती में शामिल हुए, जिसे इस्कॉन मंदिर परिवार ने कृष्ण धाम सा सुंदर सजाया था। गुरु महाराज की अगवानी के लिए मंगल कलश रखकर फूलों की रंगोली और रास्ते में दीप प्रज्वलित किए गए थे। मंदिर में भगवान कृष्ण की

प्रसन्नता के लिए आज नर्मदा दास प्रभु ने मंगल आरती का गायन किया जिसमें गुरु महाराज भक्ति विकास स्वामी की उपस्थिति मंदिर परिवार के वैष्णव भक्तों के लिए संजीवनी बनी.. मंगल आरती के पश्चात भगवान नरसिंह देव आराधना और तुलसी आरती के साथ श्री हरि नाम संकीर्तन का आलौकिक आनंद यहां सदैव भक्तों को गुरु देव की उपस्थिति का आभास करता रहेगा इस आशा के साथ आज यहां भक्तों ने अपने आध्यात्मिक गुरु महाराज भक्ति विकास स्वामी को गंतव्य को अपने क्षेत्र में कृष्ण भावना भवित मिशन को गुरुदेव की मंशानुरूप और मजबूती से आम लोगों के मध्य कृष्ण भावना भवित संदेश जन जन तक पहुंचाने के संकल्प के साथ विदा किया। उल्लेखनीय है कि आज से ठीक चार साल पहले गुरु महाराज भक्ति विकास स्वामी जी इस्कॉन मंदिर परिवार में उपस्थित हुए थे उनके आशीर्वाद का परिणाम ही है आज नगर सहित आस-पास के क्षेत्रों में भी लोग बाखूब इस्कॉन मंदिर परिवार से जुड़कर हर रविवार को मंदिर कार्यक्रम में जुड़कर उसे उत्सवी बना चुके...

किस्सा ए क्रिकेट

मुकेश नेमा

लेखक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी हैं।



हमारा कस्बा चूँकि देश में ही है इसलिये बाकी देश की तरह वह भी राजनीति, फिल्में और क्रिकेट को ही ओढ़ता-बिछता है। इन्हीं के बारे में सोचता है और यह मानता है कि इनके बारे में सोच लेना ही काफी है। लिहाजा गाँव के राम भरोसे टी स्टॉल पर ठकुरों की, बूढ़ों की और बेरोजगार लड़कों की भीड़ है और बस क्रिकेट की चर्चाएँ हैं। फूफाजी हमारी टीम हार कैसे गई? वो भी फ़ाइनल मैच में, जबकि उसके पहले लगातार जीत ही रही थी वो। गुप्ता जी का लड़का सच में दुखी है!

बेटा इस हार का इतना रंज भी मत कर। दूसरे देशों की टीमों बस हिंदुस्तान को जिताने के लिये तो नहीं खेलती है ना। उन्हें भी हक है कि कभी कभी वो भी जीत जायें।

पर हमारे खिलाड़ी अब तक तो अच्छे खेल रहे थे ना। कल क्या हो गया? तुमने किससे कहा कि क्रिकेट खिलाड़ी खेलते हैं?

मतलब!

बेटा ये अनोखा खेल है। इसे खेलने वाले नहीं खेलते। मैदान खेलता है। पिच खिलाती है इन्हें। ये तो कठपुतलियाँ हैं जैसा मैदान नचता है इन्हें वैसा ही नाचना पड़ता है इन्हें।

तो खिलाड़ी क्या करते हैं?

खिलाड़ियों के पक्षे खेलने से भी ज्यादा जरूरी काम होते हैं। उन्हें साबुन, तेल अंडरवियर, बनियान, दारू, सिगरेट, पान मासाला से लेकर दूधपेस्ट और

फूफाजी हमारी टीम हार कैसे गई?



दातुन बेचने तक की जिम्मेदारी उठाना पड़ती है। इस देश में जो कुछ भी बिक रहा है इन प्रोपेकरी लड़कों की वजह से ही बिक रहा है। हमारे बाजार और सटोरिये इन्हीं देवताओं के भक्त हैं और ये हमेशा अपने भक्तों के कष्ट दूर करने में व्यस्त बने रहते हैं। इन्हें अपना घर बसाने के लिये एक अदद

एक्ट्रेस को तलाशना होता है ! ये अपने आप में बड़ा काम है।

आप तो कुछ भी बता रहे हैं फूफाजी। यदि ऐसा है तो पूरा देश पागल क्यों है इनके लिये ?

बेटा सवाल तो लाख टके का है तेरा। हम क्रिकेट और इसे खेलने वालों

के पीछे पागल इसलिये हैं क्योंकि हम ऑलरेडी पागल हैं। हमें इस बात का सहर ही नहीं है कि हमें क्या करना और सोचना चाहिये, हम क्रिकेट इसलिये देखते हैं क्योंकि हमारे पास बेशुमार फ़ालतू वक है। फ़ालतू वक इसलिए है क्योंकि हम फ़ालतू हैं। हम फ़ालतू इसलिए हैं क्योंकि हमें विचार पूर्वक फ़ालतू बनाए रखा गया है। और ऐसा करने वाले वो हैं जो मलाई खा रहे हैं और हमेशा खुद ही खाते रहना चाहते हैं।

फिर हम इनके हारने जीतने की चिंता करते क्यों हैं ? यह इसलिए। क्योंकि हमें यह पता ही नहीं है कि चिंता करने के जरूरी मुद्दे दरअसल हैं क्या। हम जरूरी मुद्दों पर न सोचें इसलिए ही क्रिकेट है। दरअसल ये वो अफ़ीम है जिसे कामकाजी मजबूर माँ अपने रोते हुए बच्चे को चटा देती है। हम यह मानने भी तैयार ही नहीं कि क्रिकेट मनोरंजन से अधिक कुछ नहीं। इसे विचारपूर्वक राष्ट्रीय अस्मिता से जोड़ दिया गया है। इसलिए जीतते ही हम गर्व से भर जाते हैं और इसमें होने वाली हार हमें दुख के समंदर में धकेल देती है। यदि हम आर्थिक दृष्टि से अधिक सफल, प्रज्ञापूर्ण और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के होते तो इसे तटस्थ भाव से देखते और हार जीत के परे बस खेल का आनंद लेने में सक्षम होते। पर अफसोस ऐसा है नहीं। और यही हमारी नियति है।

बातें अब गरिष्ठ हो चली हैं। ऐसी बातें जो अपच की वजह बन सकती हैं। कस्बे के कुछ लोग मानने भी लगे हैं कि फूफाजी अब सटिया चुके। और उन्हें अनसुना कर दिया जाना ही ठीक है। ठीक भी है ये। और जैसा कि पहले ही बताया था मैंने कि बाकी देश की तरह हमारे कस्बे की पावन शक्ति भी खराब है। इसलिये लोग क्रिकेट की ही बातें करना चाहते हैं और क्रिकेट को लेकर ही दुखी और सुखी होने में राजी हैं।

बुकाखेड़ी के पास बाइक स्लीप होने से बाइक सवार घायल



बैतूल/मुलताई। छिंदवाड़ा रोड पर बुकाखेड़ी डैम के पास सोमवार दोपहर करीब 1 बजे डैम के पास बाइक अनियंत्रित होने से बाइक सवार बाइक सहित गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसके हाथ पैर एवं सिर में गंभीर चोट आई है। सूचना मिलने पर 108 एंबुलेंस से घायल को मुलताई अस्पताल लाया गया। जहाँ उसका प्राथमिक उपचार किया गया। बताया जाता है कि ग्राम पिपरिया निवासी निलेश पिता बिनेदी पवार 27 वर्ष अपने गांव से मुलताई की ओर आ रहा था इस दौरान ग्राम बुकाखेड़ी डैम के पास बाइक अनियंत्रित होने से वह रोड पर गिर गया जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसे 108 एंबुलेंस से नगर के सरकारी अस्पताल लाया गया। जहाँ उसका प्राथमिक उपचार किया गया।

डहुआ में चल रही रामलीला, राम भरत मिलाप के साथ हुआ दशरथ मरण की लीला का मंचन



बैतूल/मुलताई। समीपस्थ ग्राम डहुआ में चल रही रामलीला के मंच पर रविवार की रात स्थानीय कलाकारों द्वारा राम भरत मिलाप एवं दशरथ मरण की हृदय स्पर्शी लीला का मंचन किया गया। रामलीला के मंच पर सर्वप्रथम केवट द्वारा भगवान राम, सीता एवं लक्ष्मण को अपनी नाव से गंगा पार कराने की लीला का मंचन किया गया। जिसके बाद भगवान राम एवं भरत के बीच मिलाप एवं दशरथ मरण की मार्मिक लीला का मंचन किया गया। लीला में सुधीर कड़वे ने भगवान राम, मयूर बारगे ने सीता माता, राजू परिहार ने सुमंत, फुस्सा पवार ने निपाद, अनिल बारगे ने लक्ष्मण, घनश्याम मगरदे ने केवट, मनीराम बारगे ने राजा दशरथ, नीलेश मगरदे ने केकई की भूमिका निभाई।

गौमाता से आती है समृद्धि : मोहन नागर

त्रिवेणी गौशाला में धूमधाम से मनाया गोपाष्टमी पर्व

बैतूल। गौसंवर्धन और गौसंरक्षण के क्षेत्र में विगत 25 वर्षों से समर्पित भाव से काम कर रही त्रिवेणी गौशाला झगडिया में सोमवार को गोपाष्टमी पर्व धूमधाम से मनाया गया। गोपाष्टमी पर्व पर सैकड़ों लोगों ने त्रिवेणी गौशाला में गौमाता का पूजन और आरती की। त्रिवेणी गौशाला संचालन समिति ने गौशाला के संस्थापक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक रहे राधेश्याम पांडे के चित्र पर माल्यार्पण कर उनके सेवाभाव को याद किया। गोपाष्टमी पर्व पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए भारत भारती शिक्षा समिति के सचिव, प्रसिद्ध पर्यावरणविद, चिंतक, विचारक शिक्षाविद मोहन नागर ने कहा कि गौमाता से समृद्धि आती है। जहाँ गाय रहती है, वहाँ बीमारियाँ नहीं फैलती, मनुष्य की आयु लंबी होती है, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे, जंगल, खेती सब समृद्ध होते हैं। श्री नागर ने कहा कि समृद्धि के लिए गौ संरक्षण के साथ ही गौ आधारित खेती पर जोर देना चाहिए। कार्यक्रम को सांसद डी.डी. उखे ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर त्रिवेणी गौशाला के सचिव मनीषसिंह ठाकुर ने गौ शाला का वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।



प्रस्तुत किया।

गौशाला के प्रकल्पों का किया भ्रमण, गौ उत्पादों की खरीदी- त्रिवेणी गौशाला झगडिया में गोपाष्टमी पर्व पर सैकड़ों लोगों ने गौमाता का पूजन करने के साथ ही गौशाला के प्रकल्पों का भ्रमण किया और गौ उत्पादों की खरीदी भी की। गोपाष्टमी कार्यक्रम में शामिल हुए लोगों ने त्रिवेणी गौशाला परिसर में स्थित गौवंश निवास, कंडा, लकड़ी निर्मित केन्द्र, चिकित्सालय, जैविक खाद, निर्माण यूनिट, किसान प्रशिक्षण केन्द्र सहित



अन्य प्रकल्पों का भ्रमण किया। त्रिवेणी गौशाला परिसर में लगाई गई गौ उत्पादों की प्रदर्शनी से सैकड़ों लोगों ने हवन कंडा, धूपबत्ती, गौनाइल, गौमूत्र अर्क, नेत्राजन, जैविक खाद सहित अन्य गौ उत्पादों की खरीदी की। कार्यक्रम में भोजन प्रसादी का वितरण भी किया गया। गोपाष्टमी पर्व कार्यक्रम में सांसद डीडी उखे, पूर्व विधायक शिवप्रसाद राठौर, भारत भारती शिक्षा समिति सचिव मोहन नागर, जिला पंचायत उपाध्यक्ष हंसराज धुवे, श्याम अग्रवाल, जगदीश अग्रवाल, चाटई एकाउन्टेन्ट प्रदीप खड्डेलवाल,

धर्मेन्द्र माहेश्वरी, डॉ. एमएल राठौर, पिंटू राजसिंह परिहार, राजेश साहू, नारायण धोटे, शिम साहू, ग्राम पंचायत कडई की सरपंच पुष्पा झरबड़े, त्रिवेणी गौशाला झगडिया के संरक्षक नवीन तातेडू, अध्यक्ष राजेश मेहता, उपाध्यक्ष पंजाबराव मगरदे, सचिव मनीषसिंह ठाकुर, कोषाध्यक्ष रामराव वराटे, संचालकगण दीपक कपूर, विमल दुबे, विवेकसिंह भदौरिया, ऋषिराम सरले, रामभरोसे यादव, तनुज शाह प्रबंधक मनोज वर्मा सहित बड़ी संख्या में नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्र के लोग मौजूद थे।

आष्टा में एक घर में निकला जहरीला कोबरा सांप, मचा हड़कंप, घबराकर छत पर चढ़े परिजन



बैतूल/मुलताई। प्रभात पट्टन विकासखंड क्षेत्र अंतर्गत आने वाले ग्राम आष्टा में रविवार देर रात शुभम माथनकर के घर के बाथरूम में जहरीला कोबरा सांप निकलने से हड़कंप मच गया, महिलाएं घबरा गईं, बाथरूम में सांप को देखकर महिला सहित परिजन घबरा गए और कुछ परिजन तो छत पर चढ़ गए। सांप निकलने की सूचना तत्काल सर्प मित्र श्रीकांत विश्वकर्मा को दी गई जिसके बाद वे मौके पर पहुंचे और उन्होंने करीब 1 घंटे की कड़ी में मशकत के बाद सांप का सुरक्षित रेस्क्यू कर लिया। उन्होंने बताया कि यह सांप कोबरा प्रजाति का सांप था, जिसमें न्यूरोटोक्सिन जहर पाया जाता है। अगर यह किसी को काट ले तो इंसान की मृत्यु हो जाती है। इसीलिए यदि सांप काटे तो ओझा गुनी झाड़ू फूंक के चक्र में ना पड़े, तत्काल नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचकर अपना इलाज करवाए।

121 फिट की चुनरी से होगा मां माचना का श्रृंगार

धूमधाम से मनाई जाएगी माचना जयंती

बैतूल। माचना जयंती धूमधाम से मनाने की रूपरेखा को लेकर मां माचना सेवा समिति की बैठक संपन्न हुई। समिति की सचिव सरिता दीपक राठौर ने बताया कि समिति और मातृ शक्ति की महिलाओं के संयुक्त तत्वधान में जयंती विगत 14 वर्षों से निरंतर मनाई जाती रही है। उन्होंने बताया कि जिले की जीवन दायनी मां माचना उत्सव 27 नवम्बर सोमवार को शाम 4 बजे दैय्यत बाबा घाट बड़ेरा पर धूमधाम से मनाई जाएगी। जिसमें 121 फिट की चुनरी से श्रृंगार किया जाएगा और दीपदान किया जाएगा। समिति अध्यक्ष बीआर खंडगरे ने सभी से कार्यक्रम में उपस्थित होने का आग्रह किया है।

बदलते मौसम में बढ़ सकती है निमोनिया की संभावना

सीहोर(नित्र)। बदलते मौसम में बच्चों में निमोनिया के लक्षणों की पहचान एवं उसके उपचार एवं प्रबंधन के लिए स्वास्थ्य विभाग ने तैयारी की गई है। निमोनिया के आकलन, निमोनिया का वर्गीकरण, खतरनाक लक्षणों के चिन्हों की पहचान, समुदाय आधारित निमोनिया का प्रबंधन, उपचार एवं रेफरल के संबंध में मैदानी कार्यकर्ताओं को जानकारी दी गई। स्वास्थ्य विभाग ने बताया कि बदलते मौसम में बच्चों को निमोनिया के लक्षणों की पहचान एवं उसके उपचार एवं प्रबंधन के लिए विभाग तैयार है। जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र की एएनएम को निमोनिया के संबंध जानकारी दी। स्वास्थ्य विभाग ने बताया कि सर्दी के मौसम में बच्चों में निमोनिया के केसेस ज्यादा पाए जाते हैं। इसे देखते हुए मैदानी स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को अवगत किया गया है। जिससे कि वह अपने क्षेत्र में निमोनिया के लक्षण वाले बच्चों की शीघ्र पहचान कर शीघ्र प्रबंधन कर सकें। निमोनिया से बचाव एवं जागरूकता के लिए विभाग द्वारा 29 फरवरी तक सांस अभियान संचालित किया जाएगा। निमोनिया फेफड़े का संक्रमण है। जिससे फेफड़ों में सूजन हो जाती है। निमोनिया होने पर बुखार खांसी और सांस लेने में कठिनाई जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। तेज सांस चलना या छाती का धंसना निमोनिया के दो मुख्य चिन्ह है। प्रशिक्षण में शिशु रोग विशेषज्ञों द्वारा बच्चों में सांस की दर को गिनकर निमोनिया के लक्षणों की पहचान के संबंध में जानकारी दी गई। बच्चों में सांस की गति का ठीक ढंग से आकलन करके निमोनिया को प्रारंभिक अवस्था में ही पहचाना जा सकता है। इसके लिए बच्चों की श्वास को एक मिन्ट तक निरंतर देखा जाता है।

तकनीक

राजकुमार जैन

स्वतंत्र विचारक और लेखक

कृत्रिम मेधा से देश दुनिया में तेजी से बदलाव आ रहे हैं जो समय की जरूरत भी है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद हम तेजी से आगे बढ़ सकते हैं और सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। गवर्नेंस पर भी इसका व्यापक प्रभाव दिखाई पड़ रहा है। आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के प्रशिक्षण मॉडल इतने सशक्त हो गए हैं कि वो लोगों के मन की भावनाओं को भी समझने लगे हैं और भावनाओं को प्रभावित कर किसी एक पक्ष की ओर झुका भी सकते हैं। अमेरिकी चुनावों में इनकी प्रभावशाली उपस्थिति दुनिया देख चुकी है। एआई के सबसे खतरनाक उपयोग डीपफैक को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी चिंता जताई है।

हाल ही में हो रहे पाँच राज्यों के विधानसभा चुनावों में भी एआई की सशक्त मौजूदगी का अहसास विभिन्न स्तरों पर हुआ है। राजनीतिक पार्टियों ने एआई का उपयोग आकर्षक घोषणा पत्र, प्रभावी वीडियो, उपलब्धियाँ बताने वाले लेख और अन्य प्रचार सामग्री, अपने उम्मीदवार की छवि गढ़ने, विरोधी उम्मीदवार को बुरा साबित करने जैसे कामों के लिए किया गया। सामान्यतया उम्मीदवार अपने घोषणापत्र में विकास के वादे करते हैं, समस्याओं से मुक्ति दिलाने की बात करते हैं, लोक लुभावन वादे करते हैं। लेकिन इस क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए मध्य प्रदेश राज्य के इंदौर के एक विधायक प्रत्याशी रमेश मेंदोला ने तो एआई की ताकत और भविष्य की संभावनाओं का आकलन करते हुए एआई

एआई की बढ़ती ताकत, चुनावी घोषणा पत्र में मिली जगह

का प्रशिक्षण दिलवाने का वादा ही अपने घोषणापत्र में कर दिया है। अपने क्षेत्र के युवाओं को आकर्षित करने का उनका यह प्रयास अपने आप में अनूठा है। ऐसा करने वाले वो एकमात्र प्रत्याशी हैं।

लोगों के मन में एआई को लेकर एक डर है कि एआई उनकी नौकरिया लेंकर उन्हें बेरोजगार बना देगा। लेकिन विषय विशेषज्ञों का कहना है कि एआई भविष्य की वो तकनीक है जो नए रोजगारों का सृजन करेगी। युवाओं की टोलियों के समक्ष मेंदोला कहते हैं कि हमें एआई से डरने की नहीं बल्कि उसका उपयोग करना सीखने की जरूरत है क्योंकि नौकरी में आपकी जगह एआई नहीं बल्कि उस क्षेत्र में एआई का उपयोग जानने वाला लेगा। बीते वर्षों में हमने देखा है कि टैली जैसे अकाउंटिंग सॉफ्टवेयर के आने के बाद अकाउन्टेन्ट की नौकरियों पर खतरा महसूस किया गया था। लेकिन आज की हकीकत यह है कि सॉफ्टवेयर के चलने में आने के बाद कई ऐसे व्यवसायी भी अकाउंट रखने लगे हैं जो जटिलता के चलते पहले इससे करतार थे। इस कारण हजारों नए रोजगारों का सृजन हुआ है और टैली जानने वालों के लिए रोजगार की कमी नहीं है। इसी बात को ध्यान में रखकर लोगों को अपने अपने क्षेत्र में एआई के उपयोग के बारे में प्रशिक्षण लेना चाहिए। एआई के प्रशिक्षण को लेकर उनकी इस अनूठी पहल से युवा वर्ग बेहद उत्साहित और प्रभावित है।

आगामी चुनावों में हम देखेंगे कि जिस उम्मीदवार की पहुंच में जितने अधिक प्रभावी एआई टूलस होंगे उसके विजयी होने की संभावना उतनी ही अधिक होगी। मिसाल के तौर पर चुनावी खर्च पूरा करने के लिए पार्टी के उम्मीदवार अपने अभियान के लिए पार्टी समर्थकों से चंदा जुटाते हैं। प्रमुख पार्टियों के प्रत्याशीयों के हजारों ऐसे समर्थक होते हैं

जो चंदा दे सकते हैं लेकिन सभी उम्मीदवार की जानकारी में नहीं होते। इनका पता पता लगाने के लिए उम्मीदवार एआई की मदद ले सकते हैं। एआई की सहायता से कम से कम समय में संभावित चंदा देने वालों की लिस्ट बनाई जा सकती है। एआई सॉफ्टवेयर तमाम समर्थकों की प्रोफाइल और उससे जुड़ी जानकारी को प्रोसेस कर के चंदा दे सकने वालों की एक संभावित लिस्ट बना देता है। इससे एक तरफ उम्मीदवार के लिए चुनाव लड़ने का खर्च कम होता है, तो दूसरी तरफ उसे जिन लोगों की लिस्ट मिलती है वो उसके लिए की तरह से उपयोगी और फायदेमंद होती है।

आज का प्रत्याशी एआई का इस्तेमाल करके मतदाता से सीधे संवाद कर रहा है और हजारों मतदाताओं तक व्यक्तिगत पहुंच भी बना रहा है। सोशल मीडिया प्रबंधन टीम अपने उम्मीदवार और अपनी पार्टी के संदेश के साथ ही विपक्ष की कमियों को हर नागरिक के मोबाइल फोन तक पहुंचाने की रणनीति पर काम कर रही है। बगैर एआई के यह बहुत समय खाऊ और अत्यधिक खर्चीला काम होता था। इसे बनाने वाला जनरेटिव एआई 'चैट-जीपीटी' पिछले साल नवंबर में लॉन्च किया गया था जो अब आम लोगों के लिए उपलब्ध है। मतदाताओं की भावनाओं को अपने पक्ष में मोड़ने के लिए वीडियो, फोटो और लेख जैसी प्रचार सामग्री आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी 'एआई' से बनाए जाती है, जो लाखों मतदाताओं तक पहुंचाई जाती है, वो भी तेज गति से। इसे अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रथमिकताओं के हिसाब से तैयार कर के उनकी प्रोफाइल और प्राथमिकताओं के हिसाब से तैयार कर के भेजी जाती है।

लोग घर पर हों, ऑफिस में या कहीं और, लेकिन उनके फोन हमेशा

ऑन रहते हैं। इसलिए डिजिटल माध्यम लोगों से संपर्क कर मैसेज, ईमेल, फ़ेसबुक, ट्वीटर, इंस्टाग्राम आदि के जरिये चुनावी संदेश पहुंचाने का एक अच्छा औजार है। मगर प्रचार के इस तरीके में कहीं ना कहीं लोगों से सीधे संपर्क की कमी रह जाती है। यह बहस का मुद्दा है कि यह तरीका सीधे संपर्क से ज्यादा प्रभावी है या नहीं लेकिन यह सच है कि इसके माध्यम से हम एक समय में कहीं ज्यादा लोगों से जुड़ सकते हैं।

एक तरफ जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में चुनावी प्रक्रिया में अधिक समानता लाने और उसे लोकतांत्रिक बनाने की क्षमता है तो दूसरी तरफ यह तकनीक चुनाव प्रचार में फर्जी सामग्री के इस्तेमाल से मतदाता को गुमराह कर लोकतांत्रिक प्रक्रिया को भी क्षति पहुंचाने में भी सक्षम है। ऐसे में यह सावधानी बरतना उचित होगा कि जो सामग्री पढ़ी गई है उसे पहली बार ही नहीं सच ना मान लिया जाए। वस्तुतः कोई भी निर्णय लेने से पहले मतदाताओं को स्वयं जागरूक होकर फैक्ट चैक वेबसाइट जैसे माध्यमों से यह पता लगाना होगा कि उनके पास जो प्रचार सामग्री आई है वो असली है या नकली।

इन संभावित खतरों के बावजूद इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि समाज में एआई की बढ़ती स्वीकार्यता और इसकी व्यापक पहुंच के चलते विश्व भर में इसका उपयोग बहुतायत से होने लगा है और चुनाव जीतने की संभावनाओं को अपने पक्ष में करने के लिए एआई का उपयोग अब अनिवार्य होता जा रहा है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वह दिन दूर नहीं जब यह तकनीक इतनी आगे बढ़ जाएगी कि इसके इस्तेमाल के बिना चुनाव अभियान चलाना मुश्किल हो जाएगा। यहाँ तक कि एआई अकेले ही जीत की गारंटी बन जाएगा।

राइट विलक

क्रिकेट में हार : मीडिया को भी गहरे आत्म मंथन की जरूरत है



अजय बोकिल

आ | इसीसी वन डे विश्व कप टूर्नामेंट में छठी बार चैंपियन बनी ऑस्ट्रेलिया से फाइनल में बीस साल पुरानी हार का बदला लेना तो दूर भारतीय टीम रोहित अपना वो स्वाभाविक खेल भी नहीं दिखा पाई, जिसके लिए सेमीफाइनल तक अपनी अजेयता के लिए वह जानी जा रही थी। लेकिन फाइनल में जो मुकाबला टूर्नामेंट की तब तक नंबर वन और नंबर टू में रही टीमों में होने जा रहा था, वह नतीजे आने तक रिवर्स में बदल गया। भारतीय टीम की खेल में हार के कारणों का विश्लेषण शुरू हो गया है आगे भी होता रहेगा। लेकिन इस समूचे विश्व कप टूर्नामेंट में और खासकर फाइनल के पहले भारत की जीत को लेकर मीडिया और खासकर इलेक्ट्रॉनिक और सोशल मीडिया में जिस तरह का भयंकर हाइप और उम्माद भड़काने कोशिश की गई, उससे उनकी टीआरपी और हिट्स भले बढ़ें हों, भारतीय क्रिकेट टीम पर इतना नकारात्मक दबाव बन गया कि वो फाइनल में ठीक से खेल ही नहीं सकी। यह बात इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि फाइनल मैच में भारत की हार मात्र दो-चार रन अथवा एक-दो विकेट से नहीं, पूरे छह विकेट से हुई। पूरे मैच के दौरान कहीं महसूस नहीं हुआ कि भारतीय टीम ने विश्व कप टूर्नामेंट के लिए जी जान लगा दी हो। पूरा मैच लगभग इकतर्फा ही लगा। टॉस हारने के बाद मैच जीतने को लेकर भारत की वैकल्पिक रणनीति क्या थी, वह भी नजर नहीं आई। ऐसा महसूस हो रहा था मानो टूर्नामेंट के अंतिम निर्णायक मैच में बल्लेबाज गेंदबाजों के और गेंदबाज, बल्लेबाजों के भरोसे बैठे थे तथा फील्डिंग के मामले में खिलाड़ियों को उनकी मर्जी पर छोड़ दिया गया था।

बेशक लगभग हाथ आई विश्व कप टूर्नामेंट के यूनैचानक छिन जाने का गम भारतीय क्रिकेट टीम और क्रिकेट प्रेमियों को बरसों सालता रहेगा। इस हार के बाद टीम रोहित के सदस्यों की आंखों से आंसू छलक पड़े तो यह स्वाभाविक ही था,

क्योंकि इस अकेले मैच ने अब टीम के अब तक के किए कराए पर पानी फेर दिया था। लेकिन असली सवाल तो यह है कि क्या इस क्रिकेट वन डे वर्ल्ड कप में भारत की जीत को लेकर देश भर में चार दिनों से जो मीडिया हाइप बनाया जा रहा था, वह कितना वास्तविक और जायज था? यह सही है कि बाजारवाद के जमाने में आज हर इवेंट का बाजार पक्ष पहले देखा जाता है, लेकिन इससे इवेंट से जुड़े मूल कारकों पर कितना नकारात्मक असर होता है, इस बारे में शायद ही कोई सोचता है। इसमें मीडिया भी शामिल है। बेशक भारतीय क्रिकेट टीम ने फाइनल में कुछ रणनीतिक गलतियां कीं, इसलिए हारे, लेकिन टीम नेतृत्व के सही निर्णय और खिलाड़ियों के अपने स्वाभाविक खेल से भटकने के पीछे वजह हर हाल में जीत हासिल करने का वह कुत्रिम दबाव भी है, जिसकी कतई जरूरत नहीं थी। जीत के नगाड़े सचमुच जीत हासिल करने के बाद भी बजाए जा सकते थे।

पता नहीं सेमीफाइनल में दक्षिण अफ्रीका पर धमाकेदार जीत के बाद भारतीय वन डे क्रिकेट टीम के सदस्यों ने टीवी चैनलों को कितनी बार देखा होगा, सोशल मीडिया पर कितनी बार क्लिक किया होगा, किया भी होगा या नहीं। लेकिन परोक्ष रूप से भी लगभग सभी चैनल, सोशल मीडिया पोर्टल व अखबार भी टीम रोहित को जिताने के लिए जिस तरह पिल पड़ी थे, उसका खिलाड़ियों के मानस पर प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष असर होना लाजमी था। इस दौरान क्या-क्या नहीं हुआ? खिलाड़ियों के घर परिवार वालों को खंगाला गया, पूजा, हवन, दुआएं करवाई गईं। नरेंद्र मोदी स्टेडियम के गेट से लेकर जहां खिलाड़ी ठहरे थे, उस होटल से निकलने वाली गाड़ियों के लाइव कवरेज से लेकर नीली जर्सी पहने हर शख्स को भारतीय टीम के हककारे के रूप में पेश करने की कोशिशें हुईं। पूरे कवरेज में टीवी एंकरों की अदा यूनै थी कि मानो विश्व कप

की टूर्नामेंट का पारसल भारतीय कप्तान के नाम आ चुका है, बस ऑनलाइन पेंमेंट की जरूरत है। पुराने दिग्गज खिलाड़ियों से बार-बार एक ही सवाल किया जा रहा था कि कौन जीतेगा, जिनका उत्तर भी लगभग प्रायोजित था।

एक बड़े न्यूज चैनल ने भारतीय टीम की जीत का श्रेय प्रधानमंत्री को देने तक की तैयारी कर ली थी तो कुछ ने क्रिकेट वर्ल्ड कप की जीत को भारत के विश्व गुरु बनने और इस जीत के राजनीतिक समीकरणों को बताने का खाका भी तैयार कर लिया था, दुर्भाग्य से वैसी नौबत ही नहीं आई। कुछ अखबारों ने इस क्रिकेट मैच को 'धर्मयुद्ध' और 'विश्व विजय' की संज्ञा तक दे डाली (बावजूद इस सच्चाई के कि दुनिया में क्रिकेट सिर्फ 1 दर्जन देश खेलते हैं और फुटबाल 195 देशों में खेला जाता है, जिसमें विश्व स्तर पर हम कहीं नहीं हैं)। मीडिया के लगभग हर फॉर्मेट में ऑस्ट्रेलिया से बदला लेने के लिए भारतीय टीम को उसी तरह उकसाया जा रहा था, जैसे कि आतंकी हमले का बदला पाकिस्तान को सबक सिखाने के रूप में लेने की बात की जाती है। टीवी चैनलों की हर संभव कोशिश यही थी कि दर्शक की उंगली रिमोट के उसी बटन पर रहे, जो उस चैनल का नंबर है। सोशल मीडिया इस मामले में सबसे आगे था। कुछ अति उत्साही यूजरों ने यह सिद्ध करने की भी कोशिश की कि वर्ल्ड कप में भारतीय क्रिकेट टीम की जीत का दिल्ली में सत्तासीन राजनीतिक दल का कैसे सीधा सम्बन्ध है। इसमें वो साल गिनाए गए, जब भारत आईसीसी टूर्नामेंट जीता और उस वक्त दिल्ली में किस पार्टी की सरकार थी। गोया राजनीतिक विचारधारा और सत्तासीनता का क्रिकेट में भारत के परफार्मेंस से कोई सीधा रिश्ता हो।

दरअसल इस तरह का उम्माद पैदा करना और जमीनी हकीकत तो दरकिनार करना झूठ के स्वर्ण में जीने की कोशिश

करना भी एक तरह सामूहिक मानसिक रोग है। इसकी एक झलक फाइनल मैच में भी उस वक्त दिखाई दी जब विराट कोहली दर्शकों को और जोर से हल्ला मचाने के लिए उकसाते दिखे। विराट जैसे महान खिलाड़ी को इस बात पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित करना चाहिए था कि हमारे खिलाड़ी अपना स्वाभाविक खेल कैसे खेलें और ऑस्ट्रेलिया के जाल से बाहर कैसे निकलें न कि दर्शकों को ज्यादा हल्ला करने के लिए उकसाना। इसी से साबित हो गया था कि हमारे खिलाड़ियों का ध्यान खेल से ज्यादा कहीं और है तथा उन्हें जीत के खुद के खेल से ज्यादा भरोसा दूसरे कारकों पर है।

मनोविश्लेषकों का कहना है कि भारतीय क्रिकेट टीम एक बार फिर 'फ्रीयर ऑफ फेल्योर' (हार के डर) का शिकार हुई। ऐसी मनस्थिति में इंसान का सही रास्ते पर चलते हुए भी अपने आप पर विश्वास डगमगाने लगता है। हमारे बल्लेबाजों ने जिस लापरवाह ढंग से अपने विकेट गंवाए, फील्डिंग ने बहुत सुविधाजनक फील्डिंग की, हालांकि गेंदबाजों की गेंदबाजी में कसर नहीं थी, लेकिन विकेट को पहने में जो गलती शुरू में नेतृत्व से हो गई थी, उसका कोई तोड़ बॉल्लरों के पास नहीं था। साफ झलक रहा था कि लगभग पूरी टीम एक अदृश्य दबाव में खेल रही है, खिलाड़ी गलती पर गलती किए जा रहे हैं और अपने विश्वविजिता होने के काल्पनिक मायाजाल में भटक रहे हैं। कहा यह भी जा रहा है कि फाइनल के दिन किस्मत भारत का साथ छोड़ चुकी थी, लेकिन इतना तो हो ही सकता था कि जीत को लेकर जो गैर जरूरी और किसी हद तक घातक 'हाइप' तो रोका ही जा सकता था। क्रिकेट टीम की इस मार्मिक हार से मीडिया को इतना आत्म मंथन तो करना ही चाहिए कि वह अपनी भूमिका को खेल को खेल भावना से ही खेलने देने तक ही तक ही सीमित करे, उसे युद्धोन्माद में तब्दील करने में ईश्वर का काम न करें।

मंत्रालय में काम शुरू होने की उम्मीद भोपाल में नौवीं कक्षा के छात्र ने की खुदकुशी

मतदान के बाद वल्लभ भवन में बड़ी अफसरों की हलचल, कई दफतरों में अब भी सजात

भोपाल (नप्र)। मतदान के बाद सोमवार को मंत्रालय और डायरेक्ट्रेट के दफतरों में अधिकारी-कर्मचारियों की उपस्थिति बढ़ी है। जिस तरह की अपेक्षा की थी उसके बजाय अधिकारी दफतरों में कम ही पहुंचे हैं लेकिन पिछले एक माह से जो सजाते का माहौल सभी दफतरों में बन रहा था उसकी अपेक्षा सोमवार को अधिक कर्मचारी पहुंचे। अधिकारियों का कहना है कि अब धीरे-धीरे फाइलों के मुकामेंट बढ़ने शुरू हो जाएंगे। कई विभागों के प्रमुख सचिव और सचिव स्तर के अधिकारी आज मंत्रालय पहुंचे। प्रदेश में 9 अक्टूबर के बाद चुनाव आचार संहिता लगने पर प्रमुख सचिव, सचिव और विभागाध्यक्ष कैडर के अफसरों ने फाइलों का मुकामेंट रोक दिया था। अब जबकि मतदान हो गया है और वोटिंग के बाद पहले दिन दफतर खुले हैं तो पूर्व की अपेक्षा राजस्व, पंचायत और ग्रामीण विकास, वाणिज्यिक कर, गृह, वित्त समेत अन्य विभागों में कर्मचारियों और अधिकारियों की उपस्थिति आज अधिक रही। हालांकि, कई अधिकारी सोमवार को भी दफतर नहीं पहुंचे। यही स्थिति विध्यालय-सतपुड़ा भवन में लगने वाले दफतरों में भी देखने को मिली है।



चुनाव परिणामों पर अधिक कयासबाजी- मंत्रालय और विभागाध्यक्ष कार्यालयों में पहुंचे अधिकारी कर्मचारी सोमवार को अलग-अलग बैठकों में मतदान के बाद चुनाव परिणामों पर चर्चा में ही मशगुल रहे। मतदान के मत प्रतिशत की जानकारी के आधार पर कयास लगाए जाते रहे कि किस पार्टी की सरकार बन सकती है। इन चर्चाओं में लाडली बहना योजना, ओल्ड पेंशन समेत अन्य

मुद्दों पर रिजल्ट के कयास लगाए जाते रहे। शुरू होंगे प्रशिक्षण और अन्य बैठकें- उधर पंचायत और ग्रामीण विकास विभाग ने प्रशिक्षण संस्थानों की समीक्षा बैठक मंगलवार को बुलाई है। एमपी नगर में होने वाली इस बैठक में संचालक पंचायत राज के अलावा अन्य अधिकारियों की मौजूदगी रहेगी। इसके अलावा रूटीन के कामों को लेकर भी बैठकों का निर्धारण कई विभागों में शुरू हुआ है ताकि आने वाले एक हफ्ते में आवश्यक बैठकें करके कामकाज तेज किए जा सकें। जनसुनवाई को लेकर कवायद- जिलों में बंद हुई जनसुनवाई को लेकर भी कवायद शुरू हो गई है। इसके लिए आयोग से सहमति लेकर जीपेंडी जल्द ही जनसुनवाई शुरू करने का आदेश जारी कर सकता है। वरिष्ठ अफसरों का भी मानना है कि जनसुनवाई बंद होने से शहरी और ग्रामीण इलाकों के नागरिकों की समस्याओं पर कार्रवाई नहीं हो पा रही है। पेंशन और मूलभूत सेवाओं से संबंधित नागरिक सेवाओं पर भी काम शुरू हो जाएगा। इसके साथ ही समाधान केंद्रों से मिलने वाली सेवाओं को लेकर भी कसावट की स्थिति बन सकती है।

शादी से लौटे भाई ने सबसे पहले फंदे पर लटका देखा शव



सरकारी स्कूल में पढ़ता था

एएसआई अमर सिंह ने बताया कि मोहम्मद जक्री (15) पुत्र मोहम्मद जाहिद निवासी पुराना आरटीओ ऑफिस के करीब मकान नंबर 6 पुतली घर नौवीं कक्षा का छात्र था। उसके दो बड़े भाई जैद और कैफ हैं। पिता ई रिक्शा चालक हैं। घर के करीब ही स्थित एक सरकारी स्कूल में जक्री पढ़ाई करता था। रविवार को उसके परिजन एक परिचित की शादी में गए हुए थे। वहां से सबसे पहले बड़ा भाई जैद लौटा। उसने घर का गेट लॉक देखा। काफी आवाजें देने पर भी गेट नहीं खुला तो अन्य परिजनों को सूचना दी।

पड़ोसियों की मदद से गेट तोड़कर प्रवेश किया- इसी बीच पड़ोसियों की मदद से गेट तोड़कर शव को पंखे से उतारा। पहले एक प्राइवेट हॉस्पिटल ले गए, इसके बाद हमीदिया पहुंचाया गया। जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। अस्पताल की सूचना पुलिस ने मर्ग कायम किया है। परिजनों ने बयानों में खुदकुशी का कोई ठोस कारण नहीं बताया है। घटना स्थल की तलाशी में कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। एफएसएल की टीम ने भी स्पॉट का मुआयना सोमवार को दोफर को कर लिया है।

शादी में जाने से इनकार कर दिया था- मृतक के भाई जैद ने बताया कि जक्री ने शादी में जाने से मना कर दिया था। वह माता-पिता के कहने पर भी राजी नहीं हुआ। मैं लौटा तो उसके शव को फंदे पर लटका देखा। उसने कभी किसी परेशानी का जिक्र नहीं किया। स्कूल में भी किसी परेशानी का जिक्र उसने कभी नहीं किया। हम उसे मोबाइल फोन भी नहीं देते थे।

भोपाल (नप्र)। राजधानी भोपाल के टीला जमालपुरा स्थित पुराना आरटीओ इलाके में रहने वाले नौवीं कक्षा के एक छात्र ने रविवार की रात घर में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। सुसाइड नोट नहीं मिलने से मौत के सही कारणों का खुलासा नहीं हो सका है। उसके परिजन एक शादी समारोह में शामिल होने गए थे। इस दौरान वह घर में अकेला था तब उसने यह कदम उठाया है। परिजनों के लौटने पर आत्महत्या का खुलासा हुआ। मामले में पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है।

बुधनी के अस्पताल में महिला की मौत, परिजनों ने किया हंगामा

बुधनी (नप्र)। सीहोर जिले के बुधनी अस्पताल में सोमवार को इलाज करवाने आई एक महिला की मौत हो गई। उसके परिजन ने नर्स पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए हंगामा कर दिया। जानकारी के अनुसार बुधनी थाने में पदस्थ सैनिक राममोहन की पत्नी ममता सराटे को दर्द होने पर अस्पताल ले जाया गया था, जहां नर्स ने इंजेक्शन लगाया। इसके बाद ममता की मौत हो गई है। इस मामले में बुधनी एसडीओपी शशांक गुर्जर का कहना है कि दूसरी जगह के डॉक्टर को बुलाकर पोस्टमॉर्टम कराया जाएगा। पीएम रिपोर्ट आने के बाद नियम अनुसार कार्रवाई की जाएगी।

भोपाल में युवक को सिर पर मारी तलवार

साथियों ने डंडे-हथौड़ी से बेसुध होने तक पीटा, 18 घंटे बाद मामला दर्ज

भोपाल (नप्र)। भोपाल में एक बदमाश ने युवक के सिर पर तलवार से हमला कर दिया। उसके साथियों ने भी उसे हथौड़ी और डंडे से बेसुध होने तक पीटा। शनिवार रात युवक दुकान पर सामान खरीदने गया था। वहां उससे मोहल्ले के ही एक बदमाश ने बीड़ी मांगी। मना करने पर वह बरसलुकी करने लगा। बहस कुछ ही देर में मारपीट तक जा पहुंची। इस बीच आरोपी अपने घर से तलवार ले आया। युवक सिर में मार दी। लहलुहान होने के बावजूद उसके 2 साथियों ने भी डंडे और हथौड़ी से बेसुध होने तक मारपीट की। फिर तीनों उसे वहीं छोड़कर फरार हो गए। घटना के बाद परिजन युवक को लेकर छोला मंदिर थाने पहुंचे। जहां से उन्हें एक मेडिकल फॉर्म देकर अस्पताल भेज दिया। मामले में पुलिस ने 18 घंटे बाद रविवार शाम को एफआईआर दर्ज की है।



का बंडल खरीदा। वहां पहले से ही कॉलोनियों में रहने वाला नितेश खड़ा था। उसने एक बीड़ी मांगी। मेरे भाई ने मना कर दिया। इस पर नितेश अपशब्द कहने लगा। विरोध किया तो उसने झुमाझटकी शुरू कर दी। इसी बीच आरोपी दौड़कर अपने घर गया, और तलवार ले आया। कुछ ही मिनट में उसके दोनों भाई भी आ धमके। नितेश ने नरेश के सिर में तलवार मार दी। वह गिर पड़ा तो उसके भाइयों ने हथौड़ी-डंडे बरसाना शुरू कर दिया। वे बेसुध होने पर उसे पीटते रहे, और लहलुहान छोड़कर फरार हो गए। मोहल्ले वालों की सूचना पर हम वहां पहुंचे तो देखा मेरा भाई जमीन पर पड़ा है। हम उसे छोला मंदिर थाने ले गए। वहां पुलिस वालों से कहा- भाई के सिर, हाथ-पैर में गंभीर चोटें हैं। उसे अस्पताल लेकर चलिए। इस पर पुलिस वालों ने कहा थाने में इस समय केवल 2 लोग हैं। यह मेडिकल फॉर्म ले जाओ, और अस्पताल में भर्ती हो जाना। हमारे पास उस समय वाहन नहीं था। जैसे-तैसे आँटो से हमीदिया अस्पताल पहुंचे। वहां बिना पुलिसकर्मियों के मेडिकल करने से इनकार कर दिया गया। कई घंटे परेशान होने के बाद बमुश्किल उसे भर्ती किया गया। अब उसका इलाज चल रहा है।

मामला दर्ज कर लिया गया- थाना प्रभारी- भोपाल के छोला मंदिर थाना प्रभारी सुरेश चंद नगर ने बताया कि रविवार को शाम 7 बजे घायल नरेश शर्मा के बयान दर्ज किए हैं। मामला दर्ज किया जा चुका है।

3 ने मिलकर तलवार, हथौड़ी-डंडे से पीटा

घायल के भाई धर्मेन्द्र शर्मा ने बताया कि हम प्रेम नगर कॉलोनियों की गली नंबर एक में रहते हैं। मेरा छोटा भाई नरेश (36) डीटीएच फिटिंग का काम करता है। वह शनिवार रात करीब 11:30 बजे घर से निकला था। उसने पास में ही स्थित एक किराना दुकान से बीड़ी

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक स्वतंत्र प्रकाशक हैं।)



छत्तीसगढ़ के उपमुख्यमंत्री टीएस सिंहदेव ने अपने बयान से एक बार फिर राज्य के राजनीतिक माहौल को गरमा दिया है। कहा जा रहा है कि सिंहदेव ने भारत बनाम न्यूजीलैंड क्रिकेट सेमीफाइनल मैच के घटनाक्रम का उद्घारण देकर अपने दिल की बात जुबान पर ला दी। माना जा रहा है कि 2018 में कांग्रेस की सत्ता लाने में खूब मेहनत के बाद भी मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए टकटकी लगाकर पांच साल बिताने वाले सिंहदेव साहब इस बार कोई चूक नहीं करना चाहते हैं। इस कारण कहीं पे निगाहें और कहीं पे निशाना की तर्ज पर विधानसभा चुनाव के नतीजे आने के पहले ही तीर चलाने लग गए हैं। कांग्रेस ने 2023 के लिए किसी को चेहरा घोषित नहीं किया, पर चुनाव मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व में लड़ा गया। ऐसे में भूपेश बघेल को राज्य में कांग्रेस का स्वाभाविक

चुनाव नतीजे से पहले टीएस सिंहदेव ने गरमाया माहौल

नेता माना जा रहा है, लेकिन सिंहदेव के बयान से लग रहा है कि भूपेश बघेल के लिए राह आसान नहीं रहने वाला है। सिंहदेव के रुख से कांग्रेस में कुर्सी के लिए घमासान के संकेत मिलने लगे हैं। भूपेश बघेल और सिंहदेव के अलावा मुख्यमंत्री की कुर्सी की दौड़ में डॉ. चरणदास महंत और प्रदेश अध्यक्ष दीपक बैज का नाम भी सामने आ रहा है।

भाजपा में मुख्यमंत्री पद के दावेदारों की कतार

छत्तीसगढ़ में बहुमत किसे मिलेगा, यह तो तीन दिनों के भी स्पष्ट होगा, पर कांग्रेस की तरह भाजपा में भी मुख्यमंत्री पद की चाहत रखने वालों की चर्चा होने लगी है। भाजपा ने विधानसभा चुनाव मोदी के नाम पर लड़ा और मोदी की गारंटी जारी की। अब भाजपा में भी मुख्यमंत्री पद के दावेदारों को लेकर कयास लगने लगे हैं। 15 साल के मुख्यमंत्री और पार्टी के कद्दावर नेता के तौर पर डॉ. रमन सिंह का नाम मुख्यमंत्री के

लिए चर्चा में है। इसके अलावा प्रदेश अध्यक्ष के नाते अरुण साव को भी दौड़ में माना जा रहा है। आदिवासी चेहरे के तौर पर मुख्यमंत्री के लिए रामविचार नेताम और विष्णुदेव साय भी केंद्र में हैं। युवा चेहरे और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के चढ़ते के तौर पर ओ पी चौधरी का नाम भी लोगों की जुबान पर है। कुछ लोग विजय बघेल को भी मुख्यमंत्री की दौड़ में शामिल कर रहे हैं। विजय बघेल भाजपा की घोषणा पत्र समिति के प्रमुख होने के साथ मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के खिलाफ विधानसभा चुनाव मैदान में है।

महिलाएं और युवा हो सकते हैं निर्णायक

माना जा रहा है कि 2023 के विधानसभा चुनाव में महिला और युवा मतदाता निर्णायक साबित हो सकते हैं। कहा जा रहा है कि इस चुनाव में महिलाओं ने बड़-छड़कर हिस्सा लिया। युवा वोट भी मतदान के लिए निकले। भाजपा और कांग्रेस दोनों ने महिलाओं के लिए लुभावने वादे किए हैं। विवाहित महिलाओं को भाजपा

ने हर साल 12 हजार देने का वादा किया है, तो कांग्रेस ने 15 हजार रुपए सालाना देने का ऐलान किया है। कहते हैं रोजगार का मुद्दा युवाओं को झकझोरता है। लोग मानकर चल रहे हैं कि महिलाओं और युवाओं का वोट जिधर गिरा है, राज्य में उसी की सरकार बनने वाली है। जैसे 2018 में 2500 रुपए क्रेडिटल में धान खरीदी मुद्दे पर किसान कांग्रेस के साथ हो लिए थे और भारी बहुमत से उसकी सरकार बन गई थी।

बहुमत का कांटा अटकेगा 50-52 पर

माना जा रहा है कि 2023 में जिसकी भी सरकार बने, उसे 50-52 से ज्यादा सीटें नहीं मिलने वाली है। इस बार कांग्रेस और भाजपा के बीच कांटे का मुकाबला दिखा। कुछ सीटों पर ही त्रिकोणीय मुकाबले जैसी स्थिति रही। एक-दो जगह बसपा ने त्रिकोणीय मुकाबला बनाया, तो एक-दो जगह जोगी कांग्रेस ने। एकाध जगह निर्दलीय प्रत्याशियों ने भी मुकाबले को रोचक बनाया है। कहा जा रहा है मतदान

के रुख को देखकर नहीं लग रहा है कि इस बार किसी दल को एकतरफा सीटें मिलेंगी। वैसे मुख्यमंत्री भूपेश बघेल 75 सीटों पर जीत का दावा कर रहे हैं तो भाजपा 55 सीटें मिलने की उम्मीद कर रही है।

भारी उलटफेर की अटकलें

कहा जा रहा है कि 2023 के विधानसभा चुनाव में भारी उलटफेर होने वाला है। कई दिग्गजों की नाव डूब सकती है तो कई नए-नवले चेहरे चमक सकते हैं। कांग्रेस ने एंटी इंकम्बैंसी फैक्टर को कम करने के लिए अपने 22 विधायकों की जगह नए लोगों को उतारा है, पर मंत्रियों और विधानसभा अध्यक्ष-उपाध्यक्ष को नहीं छोड़ा है। भाजपा ने एक विधायक की जगह नए चेहरा को लड़ाया है, लेकिन दिग्गजों को मुकाबले में रखा है। 2018 में हारे लोग भी इस बार खिलाड़ी हैं। भाजपा ने कई अनजान चेहरे पर भी दाव लगाया है। मतदाताओं के रुख से लोग अंदाजा लगा रहे हैं कि इस बार भारी चौंकाने वाले नतीजे आ सकते हैं।